सोमेश्वर दर्पण

(गंगादशहरा विशेषांक)

अप्रैल-जून 2024

वर्ष : 04, अंक : 10

जलाभिषेक करने के लिए
कतारबद्ध श्रद्धालु

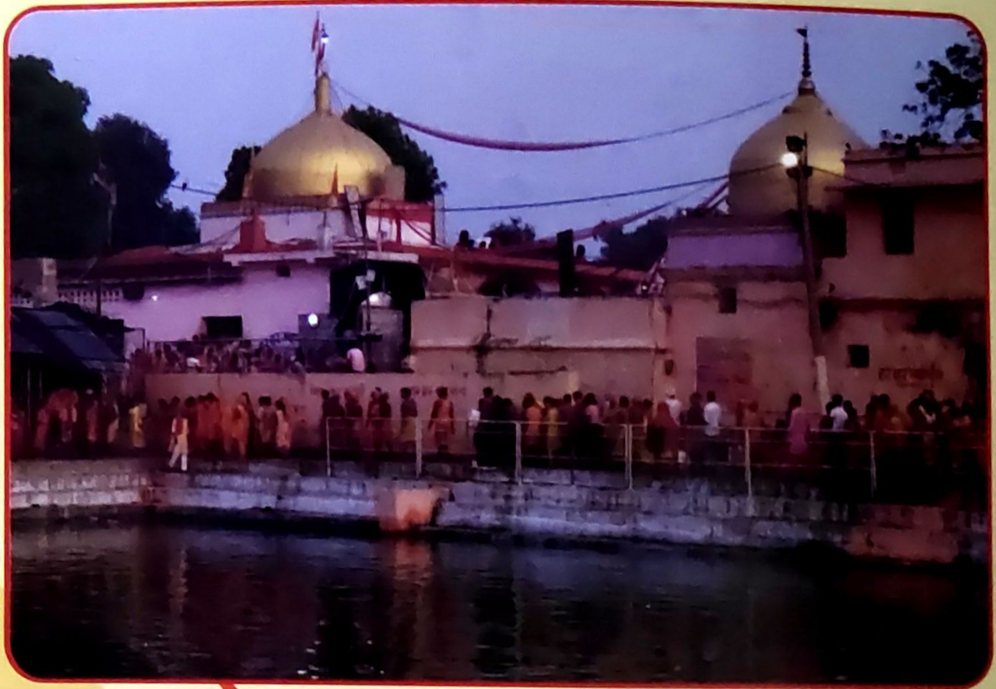

सरोवर तट पर स्थित
सोमेश्वरपार्वती मंदिर

बाबा के शिवलिंग का
अभिषेक करते स्वामी
रविशंकर जी महाराज

सोमेश्वर दर्पण

(गंगादशहरा विशेषांक)

अप्रैल 2024 से जून 2024 वर्ष : 04 अंक : 10

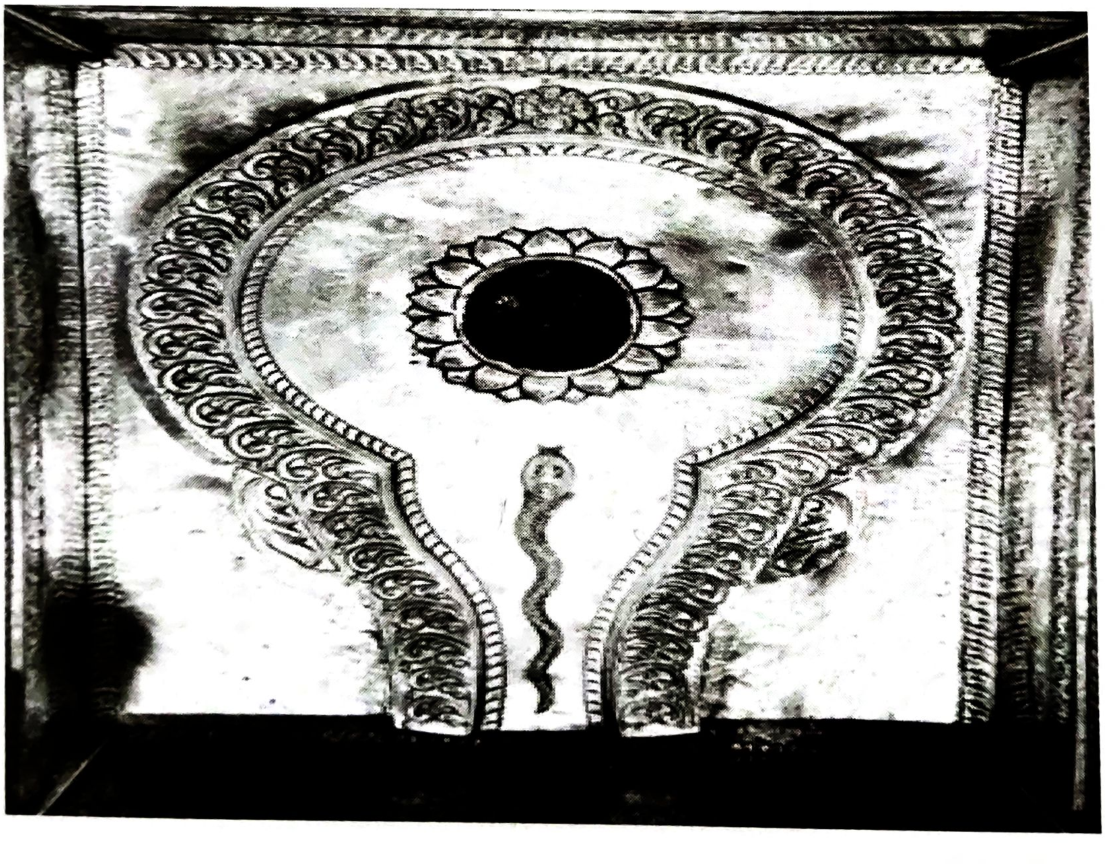

श्री सोमेश्वरनाथ मंदिर अरेराज

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण-8458441

सामेश्वर दर्पण

(गंगादशहरा विशेषांक)

सम्पूर्ण जगत् को लिंगभूत माना गया है, शिव जी के सम्पूर्ण लिंगों की कोई निश्चित संख्या नहीं है, क्योंकि—

कपालधारिणीम् देवं वरदाभय-हस्तकम्।
उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत् सोमेश्वरं सदा।।

—शिव-रहस्यम्, (10)

अर्थात्, कपाल (नरमुण्ड) धारी, अभय हस्त मुद्रा वाले, ऐसे उमा के सहित सामेश्वर शंकर का निरंतर ध्यान करता हूँ।

मुख्य संरक्षक	**: श्री सोमेश्वर नाथ महादेव, अरेराज।**
संस्थापक संरक्षक	**: श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर सह सोमेश्वर पीठाधीश्वर स्वामी रविशंकर गिरि जी महाराज।**
संयोजक	**: श्री अरुण कुमार (अनुमंडल पदाधिकारी, अरेराज)**
पत्रिका के प्रेरणा स्रोत	**: श्री संजीव कुमार (तत्कालीन अनुमंडल पदाधिकारी, अरेराज)**
संपादक	**: श्री जयगोविन्द यादव**
कार्यालय	**: श्री सोमेश्वरनाथ मंदिर अरेराज, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण-8458441**
प्रकाशन अवधि	**: अप्रैल-जून 2024**
त्रैमासिक शुल्क	**: 50 रुपये**
वार्षिक शुल्क	**: 150 रुपये**
आजीवन शुल्क	**: 2000 रुपये**
खाता संख्या	**: 40072996393**
बैंक	**: भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अरेराज**
मुद्रक	**: समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/मुजफ्फरपुर।**

अनुक्रम

सम्पादकीय

अपनी बात 03

आलेख खंड

अरेराज एक नजर में 06

गंगा दशहरा के दिन ही धरती पर हुआ था गंगा का अवतरण 07

माहेश्वर सूत्र–विचार 09

स्वयंभू महादेव हैं अरेराज के बाबा सोमेश्वरनाथ 11

संपूर्ण विश्व में पूजित है शिवलिंग का साकार स्वरूप 15

नन्दीश्वर महाराज की स्थापना गर्भगृह से बाहर ही क्यों ? 18

आदिकाल से चली आ रही है वसंत पंचमी की पांचदिवसीय कांवर यात्रा 20

शिव की अराधना का पर्व है महाशिवरात्रि 24

प्राण प्रतिष्ठा समारोह राम मंदिर अयोध्या 26

ब्रह्मलीन संत शिव शंकर गिरि जी महाराज 28

संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है सामेश्वरनाथ मन्दिर अरेराज 30

जीवन का अमूल्य सौन्दर्य है मधुर वचन 32

वेदों के पाठ से स्त्री रत्न वंचित क्यों ? 33

'शुभ जन्म दिनम तुभ्यं' बोले 'हैप्पी वर्थ डे टू यू' को भूलें 35

कविता/भजन खण्ड

शिव की बारात 36

महिमा सोमेश्वरनाथ की 37

शिव मंगलकारी 40

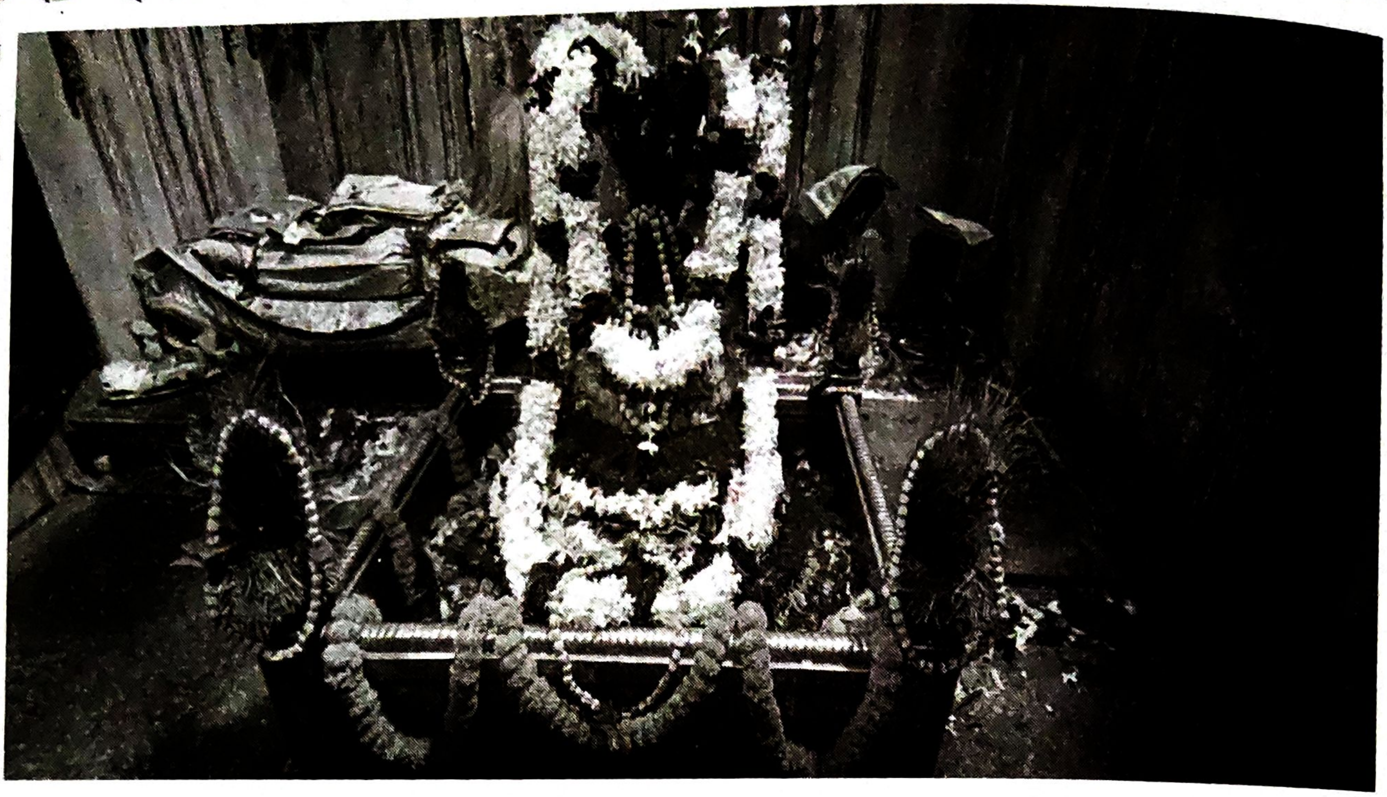

अपनी बात

गंगादशहरा के पावन अवसर पर सोमेश्वर दर्पण का दशम अंक (संयुक्तांक) सुविज्ञ पाठकों को समर्पित है। किसी भी धर्मस्थल का उत्थान, विकास एवं परिवर्तन प्रकृति की शाश्वत लीला है। इसी विकास की कड़ी में 'सोमेश्वर दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन बिहार के मानचित्र पर रेखांकित करने का एक सफल प्रयास है। 'बिहार का काशी' के नाम से प्रसिद्ध बाबा सोमेश्वर नाथ का धर्मध्वज अनादि काल (सत्युग) से हमारी देश की एकता, अखंडता, सम्प्रभुता, सामाजिक समरसता एवं आध्यात्मिकता का संदेश देता आ रहा है।

इस आध्यात्मिक पत्रिका के सफल प्रकाशन का श्रेय तत्कालीन अनुमंडल पदाधिकारी श्री संजीव कुमार एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी श्री ज्योति प्रकाश को जाता है। अधिकारी द्वय के संयुक्त प्रयास से इस पत्रिका के प्रथम अंक का प्रकाशन वर्ष 2021 में संभव हो सका था, इसके साथ ही वर्तमान अनुमंडल पदाधिकारी व इस पत्रिका के संयोजक श्री अरुण कुमार एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी श्री रंजन कुमार के विचारधारा से प्रभावित होकर 'सोमेश्वर दर्पण' का दशम् अंक अपने पाठकों को सौंपते हुए बाबा सोमेश्वरनाथ को नमन करता हूँ।

इस पत्रिका में जिन सुविज्ञ विद्वानों के आलेख उद्धृत किये गये हैं वे निश्चित रूप से पठनीय हैं। मैं पंडित उगम पांडेय महाविद्यालय, मोतिहारी के सहायक प्राध्यापक प्रेमचंद्र पाण्डेय को धन्यवाद देता हूँ जिनके प्रयास से पांडुलिपि का संशोधन संभव हो सका है।

अंत में महामंडलेश्वर सह सोमेश्वर पीठाधीश्वर श्री श्री 1008 स्वामी रविशंकर गिरि जी महाराज अरेराज जिनकी असीम कृपा से सोमेश्वर दर्पण पत्रिका का ससमय प्रकाशन होता चला आ रहा है और आगे भी होता रहेगा। इनके दृढ़ संकल्प की मंगलकामना।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ –

(जय गोविन्द यादव)

अरेराज एक नजर में

प्राचीन अरण्यराज आधुनिक अरेराज का परिवर्तित नाम है। इस अरेराज की अपनी प्रसिद्धि है, ख्याति है, गरिमा है, आदर्श है एवं सांस्कृतिक महत्व है। अरेराज देवाधिदेव की सोमेश्वरनाथ की पुण्यभूमि, देवभूमि, धर्मभूमि व आध्यात्मिक भूमि के नाम से महिमा मंडित है। यह भूमि सदैव सद्वृतियों का केन्द्र रहा है। यह अरेराज की भूमि सोमेश्वरनाथ के पवित्र जलाधारा से सराबोर होती रही है। बिहार प्रदेश में ऐसा कोई धार्मिक स्थान नहीं है जहाँ इतनी अधिक मात्रा में सद्वृतियों का विकास हुआ हो। यही कारण है कि यहाँ महर्षि वाल्मीकि, ऋषिराज मार्केंडय, मुनिश्रेष्ठ अगस्त का आगमन इसके ज्वलंत उदहारण हैं। इस पावन धर्मभूमि में ऊर्जा का स्त्रोत है। यहाँ के जल में दूध की पौष्ठिकता है, तो यहाँ का दूध अमृत तुल्य है।

यहाँ के वातावरण में हरहर महादेव का जनघोष दूध-मिश्री की तरह घुलकर एक हो गया है। अरेराज सामाजिक समरसता का एक ऐसा गुलदस्ता है, जिसमें विभिन्न रंग-रूप, आकार प्रकार के फूल एक साथ खिलकर आपसी सद्भावना का आदर्श प्रस्तुत करते है, जिसका कोई जोड़ नहीं है।

सोमेश्वरनाथ महादेव मंदिर का धर्मध्वज अनादिकाल से हमारे देश की अखंडता, एकता, सबलता संप्रभुता का संदेश देता आ रहा है। यहाँ साल में लाखो तीर्थयात्री बाबा सोमश्वरनाथ का जलाभिषेक करने आते हैं। सिर्फ और सिर्फ बाबा सोमेश्वरनाथ के सम्पूर्ण क्षेत्र में छोटे-बड़े दुकानदार, रिक्शा-ठेला, बस, हवा-हवाई, नारा-चोटी-प्रचून-मिठाई-लाई सिन्दूर वाले गरीब जीविकोपार्जन करते हैं।

सम्मानित पंडा-पुजारी, साधु-सज्जन, भिखारी, लंगड़ा-कोढ़ी व अन्य प्रकार के लोग जो अपना जीवन-बसर करते हैं। उनके परिवार जनों की संख्या करीब लाखों में हैं। बाबा सबके जीवनदाता है। बाबा के दरबार से पन्द्रह कि.मी. के दायरे में मरने वाले जीव को शिवतत्व की प्रप्ति होती है। यहाँ यमराज के दूत के पहले शिवदूत उपस्थित होकर मृतआत्मा को मोक्ष का द्वार खोलते हैं जिसके कारण अरेराज को बिहार का काशी कहा जाता है।

गंगा दशहरा के दिन ही धरती पर हुआ था गंगा का अवतरण

- **अरेराज के पांच दिवसीय गंगा दशहरा मेले में उमड़ती है श्रद्धालुओ की भीड़।**
- **गंगा दशहरा के दिन गंगाजल से शिवलिंग का अभिषेक करने से होती है मनोरथ सिद्धि।**

पौराणिक स्थल अरेराज में गंगा दशहरा के पावन अवसर पर बाबा सोमेश्वरनाथ का जलाभिषेक करने की भक्ति परम्परा सदियों से चली आ रही है। अरेराज के पांच दिवसीय गंगा दशहरा मेले का समापन ज्येष्ठ पूर्णिमा को होता है। ऐसी मान्यता है कि गंगा दशहरा केदिन ही त्रैलोक्यतारिणी गंगा का धरती पर अवतरण हुआ था। इस दिन गंगाजल से बाबा सोमेश्वरनाथ के पंचमुखी शिवलिंग का जलाभिषेक करने से दशविद्व पाप नष्ट हो जाते है। अत: गंगा दशहरा के दिन गंगा गण्डक सहित विभिन्न नदियों सहित विभिन्न नदियों के जल से बाबा सोमेश्वरनाथ का जलाभिषेक करने का आध्यात्मिक महत्व है। इस मेले में खासकर सिवान, छपरा, व गोपालगंज सहित यूपी के सीमावर्ती क्षेत्र के श्रद्धालु अरेराज के बाबा दरबार मे हाजिरी लगाने पहुचते है। गंगा दशहरा के पांच दिवसीय मेले का समापन ज्येष्ठ पूर्णिमा को होता है। सोमेश्वरनाथ महादेव के सान्निध्य में प्रवाहित शालिग्राम शिला की उदगम नदी सदा नीरा नारायणी का भी गंगा की सप्तधाराओ में स्थान है। गंगा के जन्म के संदर्भ में पुराण में कहा गया है कि भगवान शिव के संगीत को सुनकर भगवान विष्णु के शरीर से पसीना निकलने लगा तो उसे ब्रह्मा जी ने अपने कमंडल में भर लिया था। भागीरथ की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने गंगा सप्तमी के दिन अपने कमंडल से गंगा का जन्म दिया। गंगा दशहरा के दिन यदि कोई भक्त शिव के सान्निध्य में "ऊँ नम: शिवाय नारायण्यै दशहारायै गंगायै नम:" का उच्चारण करते हुए जलाभिषेक व पूजन करता है तो उसे शिव की कृपा प्राप्त होती है। ब्रह्मपुराण के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल हस्त नक्षत्र युक्त दशमी तिथि बुधवार को स्वर्ग लोक से पतितपावनी गंगा का पृथ्वी लोक पर अवतरण हुआ था। इसलिए गंगा दशहरा का दिन आध्यामिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। त्रेता युग में अयोध्या के राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया था। यज्ञ को भंग करने के लिए छोड़े गये घोडे को इंद्र ने चुराकर कपिलमुनि के आश्रम में छोड आये। राजा ने उसे खोजने के लिए अपने पुत्रों को आश्रम में भेजा जहाँ कपिल मुनि के समाधिस्थ क्रोधग्नि में जलकर भष्म हो गए। सगर का वंशज अंशुमान जब कपिल मुनि के आश्रम पर पहुचा तो

गरुण जी महाराज ने सगर पुत्रों के जलकरभष्म होने की बात बताई। सगर की मृत्युपरांत अंशुमान व उनके पुत्र दिलीप जीवन पर्यंत तपस्या करके भी गंगा को स्वर्ग से मृत्युलोक नही ला सके। अंत मे महाराज दिलीप के पुत्र भागीरथ ने अपने पूर्वजों का उद्धार करने को लेकर गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए गोकर्ण तीर्थ में जाकर कठोर तपस्या की तब जाकर ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए और कमंडल से निकालकर गंगा को पृथ्वीलोक पर ले जाने वरदान दिया। विधाता ने बताया कि मेरे कमण्डल से छूटने के बाद गंगा केवेग को पृथ्वी पर भगवान शंकर को छोड़कर कोई भी नियंत्रित नही कर सकता है।ब्रह्मा के आदेश पर भागीरथ ने एक अंगूठे के बल खड़ा होकर आराधना की तब शिवजी प्रसन्न होकर गंगा के वेग को रोकने के लिए अपनी जटा को फैलाकर खड़ा हो गए। शंकर की जटा से सप्त धाराओं के स्वरूप में गंगा धरातल पर चल पड़ी। धरातल पर आते ही हाहाकार मच गया, तब उसी मार्ग स्थित आश्रम के ऋषिराज जाहनू ने गंगा का पान कर लिया तदनन्तर उसे अपनी जंघा/कान से निकाल दिया उसके बाद से ही माता गंगा ,जाह्नवी के नामसे प्रसिद्ध हो गयी। इस घटना के बाद से ही गंगा को ऋषि जाहनू की पुत्री भी कहा जाता है। इस प्रकार अनेक स्थलों पर तरनतारन करते हुए कपिल मुनि के आश्रम तक पहुचकर गंगा ने सगर पुत्रों के भस्मावेशष को तारकर मुक्त कर दिया। भागीरथ को पुत्र सुख भी प्राप्त हुआ। उसी दिन से गंगा को भागीरथी के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हो गयी।

श्री परमात्मने नमः

माहेश्वर सूत्र-विचार

भूत-भावन सोमेश्वर नाथ ने पाणिनि पर अनुग्रह करते हुये, चौदह सूत्र को डमरू के माध्यम से प्रकाशित किया। ये चौदहों सूत्र समग्र वेदों में व्याप्त है। अर्थात् इन सूत्रों में आगत वर्णों से वेद-मन्त्र ऋषियों के कर्ण विवर में ब्रह्म की कृपा से श्रुत हुआ। अतः वेदों का दूसरा नाम श्रुति है। वस्तुतः शब्द राशि वेद अक्षरात्मक है। प्रमाण "छन्दोवत् सूत्राणि भवन्ति।" जिनका आविर्भाव महेश्वर के डमरू से होता है। इनकी पूर्ण परिपुष्टी नन्दिकेश्वर कृत काशिका में निम्न-अधोलिखित श्लोक के माध्यम से होता है—

नृतावसाने नटराज राजो ननाद ढक्कां नवपंचवारम्।
उद्धर्तुः कामः सनकादि सिद्धानेतद विमर्शे शिवसूत्रजालम् ।।

बहुत ही आश्चर्य जनक है कि शब्द शास्त्र के जनक पाणिनि को एवं शास्त्र को उपकृत करने के उद्देश्य से महेश्वर से चौदह सूत्रों की उत्पति साथ ही में सनक सनन्दन ऋषियों को मोक्ष की प्रतिपति होती है। सूत्रकार पाणिनि ने विश्व को शब्द वैज्ञानिक ग्रन्थ अष्टाध्यायी का हिस्सा बनाकर चौदहवों सूत्रों को तथा वर्णों के स्वभाव का आकलन करते हुये दो भागों में विभक्त किया (1) स्वर वर्ण (2) व्यंजन वर्ण।

जो वर्ण स्वतः स्फुटित होता है उसे स्वर वर्ण कहते है "स्वरियते स्वतः स्फुटितो भवति – इति स्वर वर्णः" इन वर्णों की कूल संख्या है। (नव) है। जिस प्रकार समग्र सृष्टि को व्यवस्थित तथा संचालन करने के लिये दैवज्ञों ने नवग्रह की स्थापना की, उसी प्रकार शब्द शास्त्रों का सूत्र अधोवर्णित है। चौदह सूत्र—(1) अडउण् (2) ऋलृक (3) एओड् (4) ऐऔच् (5) हयवरट (6) लण् (7) अड्णनञ् (8) झभञ् (9) जबगडदश् (10) खफछठथ (11) चटतव (12) कपञ् (13) शषसर् (14) हल्।

काशी की परम्परा में एक बड़ी ही अतीव रोचक मनोहर आख्यान गुरू परम्परा से सुनाया जाता है। कि गगन मण्डल में एक काक-काव तीन बार की ध्वनी करते हुये उड़ रहा था। मार्ग में आते हुये एक वणिक पथिक से एक ऋषि ने पूछा की कौआ क्या बोल रहा था। उत्तर में पथिक ने नून तेल, अदरक के रूप में बताया। पुनः वह ऋषि एक परिव्राजक से पूछा तीन बार काक की बोली से क्या स्पष्ट हुआ उत्तर में परिव्राजक ने राम, लक्ष्मण दशरथ ऐसा स्पष्ट किया। विमर्श का विषय है कि

काक की बोली केवल तीन बार ही थी। किन्तु व्यक्ति भेद होने से अर्थ बोध में भिन्नता दिखाई दी। उसी प्रकार डमरू से आगत चौरह ध्वनियों ने पाणिनि को व्याकरण का बोध कराया तथा सनक सनन्दनादि को मोक्षोपयोगी ब्रह्म विद्या का।

यह महेश्वर से आगत सूत्र समस्त व्याकरण शास्त्र की आधारशीला है। इन्ही चौदह सूत्रों से 42 (वयालीस) प्रत्याहार का निर्माण किया गया है। जो 4000 (चार हजार) सूत्रों के निर्माण में अपूर्व योगदान देता है। इन चौदह सूत्रों के अन्तर्गत दो विद्या है। एक अपौरूषेय दूसरा पौरूषेय जीन वर्णों की इत् संज्ञा होती है। वे सभी वर्ण महेश्वर कृत होने के कारण पौरूषेय हैं। जैसे—ण्, क्, ङ्, च्, ट् इत्यादि। एवं जीन की इत् संज्ञा नहीं होती है जैसे—अ इ उ ऋ से सभी अपौरूषेय है, जो वेद भगवान से अवतरित है। तन्त्र शास्त्रकारों ने प्रत्येक वर्णों के महत्व का वर्णन करते हुये बताया है कि अकार विष्णु स्वयं वेदव्यास ने लिखा है।

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ! अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतो मुखः

षोडश कलाओं के अवतार भूत स्वयं योगेश्वर अक्षरों में आकार का अपने को प्रतिलिपि मानते है। इसी प्रकार से ओम् शब्द के निष्पति में भी प्रथम अक्षर अकार ही है। इसी ओम् का अपर नाम प्रणव है, जिसमें ब्रह्म, विष्णु, महेश तीनों तिरोहित होते है। ब्रह्म के रूप में प्रलय कल्प के अनन्तर जाने जाते है।

दुसरा अक्षर इकार है जो शक्ति का प्रतिक है जो शिव में सचिहित है। यह बिन्दु विवेच्य एवं तर्क संगत प्रतीत होता है। शिव इकार विहिन शव है जो अचेतन का प्रतिक है। अचेतन में चेतना का प्रादुर्भाव इकार वर्ण के माध्यम से होता है।

परिणामतः शिव शक्ति सम्पन्न कल्याण स्वरूप हो अपने लक्ष्य का प्रतिपालक है जो सृष्टि का अदि देव है। इन वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विवेचन से इन वर्णों को अक्षर की संज्ञा दी जाती है। जिसका तात्पर्य है क्षरण रहीत अर्थात् विनाश रहित शाशवत नित्य "नक्षरतीति अक्षरम्।।"

इन्हीं वर्णों के माध्यम से शब्द की निष्पति होती है। अतः निष्पन्न शब्द ही संसार की समस्त कार्यों का संवाहक है मुख्य व्यक्ति या मुख्य सांर अपने भावों के सम्प्रेषण के अभाव में संसारिक सुख से वंचित होगा। (इतना ही नहीं एक अध्यात्मिक पुरुष)

इस माहेश्वर सूत्र के विषय में शेष नाग के अवतार स्वरूप भगवानं पतंजति में लिखा है। "प्रमाण भूत आचार्यों दर्भ पवित्र पाणिः शुचावकाशे प्राङ्मुख उपविश्य महता प्रयत्नेन सूत्राणि प्रणयति स्म तन्त्राशक्यं वर्णे नाप्यनर्थकेन किम् पुनरियता सूत्रेण।"

स्वयंभू महादेव हैं अरेराज के बाबा सोमेश्वरनाथ।

- **बिहार की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में सुविख्यात है अरेराज धाम।**
- **आदिकालीन कामनापरक शिवलिंग के रूप में पूजित है बाबा सोमेश्वरनाथ।**
- **भगवान श्रीराम व युधिष्ठिर भी पधार कर अपनी धर्मभार्या के साथ यहां किया था बाबा का शृंगार।**

भारत नेपाल सीमा पर बसा चम्पारण आदिकाल से ही धार्मिक स्थलों का केन्द्र रहा है। आस्था, समृद्धि व संस्कृति का प्रतीक बाबा सोमेश्वरनाथ का आदिकालीन कामनापीठ मन्दिर चम्पारण के अरेराज में स्थित है। इस भूमि का कण कण पवित्र व चंदन करने योग्य है। बाबा शिव की यह पौराणिक नगरी गौरवशाली विरासत का अंग है जो आदिकाल से हमें एक सूत्र में पिरोए हुए हैं। आध्यात्मिक नगरी अरेराज श्रद्धालुओं को भारत के आध्यात्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक विविधताओं के दर्शन का विशेष अवसर प्रदान करता है। शिव को पंचमुख कहते हैं क्योंकि पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पांच तत्व ही शिव के पाँच मुख हैं। सोमेश्वर नाथ के इस पंचमुखी कामना परक जागृत शिवलिंग का जलाभिषेक करने के लिए नेपाली व पड़ोसी राज्य यूपी सहित विभिन्न जिलों से पधारने वाले श्रद्धालुओं का सालों भर तांता लगा रहता है। ऐसी मान्यता है कि पुत्र प्रदाता के रूप में भी बाबा सोमेश्वरनाथ भक्तों की मनोकामना पूरी करती है।

"सोम लिंगम् कृत युगे, त्रेतायां सोमनाथकं।
द्वापरे शिवशंभु च, सोमेश्वर लिंगम् कलैयुगे।।

–कोटि रुद्र संहिता/शिव पुराण

अर्थात्, सोमेश्वर नाथ शिवलिंग का वर्णन चारों युगों सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग में मिलता है। स्कंद पुराण, वाराह पुराण, रामायण व महाभारत कालीन इस मंदिर में भगवान श्रीराम व धर्मराज युधिष्ठिर के आने व पूजा अर्चना करने के प्रमाण मिलता है। स्कंद पुराण के हिमवत खंड के तेरहवें व छब्बीसवें अध्याय में सोमेश्वर नाथ महादेव मंदिर को एक सरोवर के किनारे स्थापित होने का वर्णन मिलता है। स्कंद पुराण में सोमेश्वर नाथ महादेव का चारों युगों में अलग–अलग नाम से सुविख्यात होने के प्रमाण मिलते हैं।

"अभूत सोमेश्वरोदेव लोकनाम परिपालनाय च।
यस्य अनुष्ठान मात्रेण लक्ष्मी वृद्धिं प्रजायते।" –व्रतराज

वाराह पुराण (सतयुग) में भी सोमेश्वर स्थान की चर्चा की गई है। हिमालय के मध्य भाग में ही सभ्यता का विकास हुआ है। सृष्टि की प्रथम तीर्थ नदी नारायणी (गण्डकी) है जिसके तट पर सोमेश्वर शिवलिंग होने की चर्चा है।

"शालिग्राम शिला विष्णु हरं सोमेश्वराधिपः।"

—वाराह पुराण, अध्याय 144/श्लोक 31

त्रेता युग में भगवान श्रीराम अपनी धर्म भार्यासीता के साथ यहां पधारे थे जहां माता पार्वती को सिंदूर अर्पित कर व पगड़ी तनवाकर भगवती सीता ने अखंड सुहाग की रक्षा की कामना की थी। प्रसिद्ध साहित्यकारों की टोली सच्चिदानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय' जी के नेतृत्व में जनकपुर नेपाल, सीतामढ़ी, बाल्मीकि नगर, अयोध्या व चित्रकूट जाने के क्रम में 29 जनवरी 1983 को सोमेश्र धाम अरेराज आई थी। मूर्धन्य साहित्यकार डॉ शंकर दयाल शर्मा, श्रीमती इला डालमिया व अज्ञेय जी के अनुसार भगवान श्रीराम विवाहोपरांत जनकपुर से अयोध्या व चित्रकूट जाने के क्रम में अरेराज आये थे। यह आध्यात्मिक परम्परा आज भी यहां जीवंत रूप में देखने को मिलती है। अगहन शुक्ल विवाह पंचमी समारोह जनकपुर नेपाल में भाग लेने के लिए अयोध्या उत्तर प्रदेश से पधारने वाले श्रद्धालु जबअपने गाँव घर को लौटते हैं तो लौटने के क्रम में बाबा सोमेश्रनाथ का जलाभिषेक कर पुरूषोतम राम के पदचिन्ह का अनुसरण करते हैं।

द्वापर युग में भी पांडव पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर भी स्वभार्या द्रौपदी के साथ अरेराज पहुंचकर अपने खोए हुए राज सत्ता की प्राप्ति की कामना के लिए वैदिक मंत्रोच्चार के साथ बाबा का अभिषेक कर कमलपुष्पों से शृंगार किया था।

"अभिगम्य महादेव वरदम विष्णुमव्ययम।
सोमेश्वर विराजतो यस्य ऋण मुक्तो युधिष्ठिरः।।"

—महाभारत वन पर्व अध्याय 86/श्लोक 119

अर्थात बाबा सोमेश्वर नाथ की कृपा से पांडव पुत्रों को राज सता व वैभव की प्राप्ति हुई थी। वनपर्व में यह भी वर्णित है कि चंपावन चंपारण में देवता तप किए थे और चंपारण की सिद्ध भूमि उपेक्षितों का उद्धार करने वाली है।

विक्रम संवत 1793 अर्थात 1736 ईसवी में व्रतराज ग्रन्थ की रचना की गई जिसमें रोटक व्रत कथा व एक सरोवर के किनारे सोमेश्वर नाथ मंदिर के होने की चर्चा की गई है। अर्थात्

"अभूत सोमेश्वरः प्रत्यक्षः तस्मिन सौम्य सरोवरे।"—व्रतराज, पृ. 15

व्रतराज ग्रन्थ में भी इस मंदिर को वाराह कालीन अर्थात सतयुग कालीन बताया गया है। व्रतराज ग्रन्थ को ही आधार मानकर विक्रम संवत 2010 अर्थात सन 1944 में सोमेश्वरनाथ संचालक मंडल के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष पण्डित मधुसूदन प्रसाद मिश्र के सौजन्य से रोटक व्रत कथा व सोमेश्वर पूजा विधि ग्रन्थ की रचना की गई। इस ग्रन्थ के श्रीकृष्ण युधिष्ठिर संवाद प्रसंग में सोमशर्मा ब्राहम्ण द्वारा सरोवर के किनारे सूखे कुँए में स्थापित शिवलिंग की पूजा अर्चना करने व बाबा सोमेश्वरनाथ का ब्राह्मण के रूप में साक्षात्कार करने का वर्णन मिलता है। इसी ग्रन्थ में सरोवर के किनारे सूखे कुएँ में सोमेश्वर नाथ के स्वयंभू शिवलिंग के होने की चर्चा की गई है। शिवभक्त सात सीढियां उतरकर सूखे कुए में स्थित शिवलिंग का जलाभिषेक करते है। सात सीढ़िया सफल दाम्पत्य

जीवन के सात फेरे का प्रतीक माना जाता है।

सन् 1792 में असिएटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के सदस्य रियूबेन बरो ने भी इस धर्मस्थल का भ्रमण किया था।

सन् 1861 में अंग्रेज साहित्यकार कर्नीधम ने भी इस स्थल का दर्शन कर यहां के धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व व प्राचीनता का उल्लेख किया है। 1877 ईस्वी में एक अंग्रेज डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर ने भीअरेराज के सोमेश्वर नाथ का दर्शन कर लिखा है कि At areraj sixteen miles west of motihari. There is stone image of Someshwar mahadev in deep dry well over which a large temple has been built-

1816 में हुई सुगौली संधि के पूर्व चम्पारण सहित छपरा सोनपुर का विशाल भूभाग नेपाल क्षेत्र (मिथिलांचल) के अधीन था।आज भी बाबा महेंद्र नाथ मन्दिर सिवान व हाजीपुर कुन्हाडा घाट पर नेपाली संस्कृति का बना मन्दिर इस क्षेत्र को नेपाल का ही भूभाग होने की पुष्टि करता है।

चंपा के फूलों से आच्छादित चम्पारण का तीर्थ स्थल अरेराज अनादि काल से ही हमारे आध्यात्मिक संस्कृतियों को गौरवान्वित कर रहा है। सिद्ध पीठ होने के कारण यहाँ सालो भर मुंडन, उपनयन, लखराव, अष्टयाम, रुद्राभिषेक व विवाहादि शुभ कार्य वाराणसी, विंध्याचल पशुपतिनाथ एवं देवघर की तरह यहां भी निरंतर संपन्न किए जाते हैं। सूखे कुएं में स्थापित अति प्राचीन काले रंग का पंचमुखी शिवलिंग होने के कारण अरेराज के इस स्थल को बिहार का देवघर व बिहार का काशी के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। बिहार के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में भी अरेराज की चर्चा की जाती है।

नेपाल के पशुपतिनाथ के दक्षिण, वैद्यनाथ धाम देवघर झारखंड के पश्चिम एवं काशी विश्वनाथ वाराणसी के पूर्व में स्थित चंपारण अरेराज बिहार में सोमेश्वर नाथ महादेव का पुरातन स्थान है जहां सालों भर शिव भक्तों का आना-जाना लगा रहता है। प्राचीन संस्कृति में "अस्ति मगध देशे चंपकवती नाम अरण्यानी" के अनुसार चंपकारण ही कालांतर में चंपारण के नाम से प्रचलित हुआ। नैमिषाअरण्य, दंडकारण्य की तरह ही हिमालय के सीमावर्ती व आध्यात्मिक क्षेत्र में चंपारण की भूमि उर्वरा रही है इसी चंपकारण्य के मध्य में नारायणी नदी का उत्तरी छोर अरण्यवन था जो कालांतर में अरण्य राज और आज अरेराज के रूप में विद्यमान है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि 'आर्य राज' का ही विकृत स्वरूप अरेराज है। सोमेश्वर महादेव मंदिर के आसपास दर्जनों जागृत स्थल है जहां सालों पर भक्तों की भीड़ लगी रहती है। काल भैरव मंदिर, जालपा स्थान, दीघा क्षेत्र, घोड़हनदेवी मंदिर आदि स्थल एक जागृत साधना स्थल के रूप में भक्तों को आकर्षित करता है। सोमेश्वर नाथ धाम अरेराज जहां साल में सात महत्वपूर्ण मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें बसंत पंचमी, फाल्गुन महाशिवरात्रि, फाल्गुनी त्रयोदशी, वैशाख त्रयोदशी, गंगा दशहरा, श्रावणी मेला, अनन्त चतुर्दशी मेला, के अवसर पर लाखों की संख्या में कांवरिये श्रद्धालु जलबोझी कर कांवर यात्रा करते हुए बाबा का जलाभिषेक कर आस्था के सरोवर में डुबकी लगाते है। बोलबम के अहर्निश उदघोष के साथ कांवरिये बागमती, गंगा, सरयुग, नारायणी आदिडोरीगंज, पहलेजा के संगम घाटों से जलबोझी कर यहां जलाभिषेक करने के लिए आस्था का जनसैलाब उमड़ पड़ता है। इतना ही नहीं

शिव को अति प्रिय त्रयोदशी, चतुर्दशी सोम व शुक्रवार को भी सालो भर यहां जलाभिषेक करने के लिए जनसैलाब उमड़ पड़ता है। अन्नपूर्णा की साक्षात देवी पार्वती व शिव के अरेराज दरबार में फसल की बाली व कृषि उपज का निकाले गए शिवांश को बाबा दरबार में समर्पित कर पुण्य के भागी बनने की भी परम्परा सदियों से चली आ रही है। यहां श्रद्धालु माता अन्नपूर्णा की प्रतिमूर्ति पार्वती के समक्ष अगहनी चावल के शुद्ध आटे का रोट चढ़ाकर अपनी कामना की पूर्ति करते है। रोट को चढ़ाकर बाबा के दरबार में रोटक व्रत करने की अद्भुत प्रथा भारतवर्ष के किसी अन्य शिव मंदिरों में देखने को नहीं मिलती है। अलौकिक परंपराओं के अनुसार मन्नते पूरी होने पर सुहागिन स्त्रियां मंदिर प्रांगण में ही नट जाति के लोक नर्तकों को अपने आंचल के खुट पर नचवाकर इसे अपना परम सौभाग्य मानती हैं। यह लोक नृत्य भगवान शिव को अति प्रिय है। इतना ही नहीं कामना पूरी होने पर भक्त अपने घर से धरती परबाजे गाजे के साथ 'जय शिव जय शिव' कहते हुए व लोटपोट करते दंड देते हुए बाबा सोमेश्वरनाथ के दरबार में पहुंचकर हाजिरी लगाते है। घर की सुहागिन महिलाओं के द्वारा पोछे-पीछे चलकर दंड देने वाले भक्त के पीछे पीछे चलकर फूल अक्षत की वर्षा करने का मनोरम दृश्य भक्तों को भाव विभोर कर देता है। इस दरबार में शिव पार्वती के गठबंधन करने की परंपरा भी युग युगांतर से चली आ रही है ऐसी मान्यता है कि मर्यादा पुरषोत्तम राम भी विवाहोपरांत माता सीता के साथ जनकपुर से अयोध्या जाने के क्रम में यहां पगड़ी तनवाई थी। माता सीता भी पार्वती को सिंदूर चढ़ा अखंड सुहाग रक्षा की कामना की थी। शिव पार्वती को पगड़ी तनवाने की आदिकालीन परंपरा आज भी कायम है। आज भी विवाह के सवा महीने बाद नवदम्पति इस दरबार में माथा टेकते है जिसे लोकाचार में माथ लगाना कहते है। ऐसी मान्यता है कि पुत्र सुख से वंचित महिलाये पूर्णिमा की रात्रि में शिव लिंग पर चढ़ाए गए जल से स्नान करती है तो उसे पुत्र सुख की प्राप्ति होती है। स्कंद पुराण, वाराह पुराण, शिव पुराण, महाभारत के वन पर्व, कुमार संभव, मत्स्य पुराण, भागवत महापुराण पदम् पुराण आदि में चंपकारण्य व गंडक नदी के उत्तरी तट पर सोमेश्वरनाथ मन्दिर स्थित होने का प्रमाण मिलता है। गंडक नदी आज अरेराज से दक्षिण 8 किलोमीटर की दूरी पर प्रवाहित हो रही है। नदिया अपना मार्ग बदलती रहती है। कालांतर में गंडक नदी सोमेश्वरनाथ मन्दिर के समीप प्रवाहित होती थी जिसके अवशेष आज भी मन्दिर के समीप तिलपर्णिका नदी के रूप में देखने को मिलता है। इस नदी की जलधारा केसरिया होकरआगे चलकर नारायणी नदी में समाहित हो जाती है।

आज कलियुग में तो हम सभी भक्तजन को बाबा सोमेश्वर नाथ का आशीर्वाद सद्यः प्राप्त हो रहा है। अत: सिद्ध है कि बिहार की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में सोमेश्वर नाथ महादेव अरेराज का भव्य दरवार शिवभक्तों के सैलाब को बरवस आकर्षित कर रहा है।

कैसे पहुँचे सोमेश्वरनाथ धाम अरेराज का सबसे नजदीकी एयरपोर्ट पटना दरभंगा व गोरखपुर है जहाँ से सड़क मार्ग से यहां पहुंचा जा सकता है। यहां से पटना, दरभंगा व गोरखपुर एयरपोर्ट की दूरी 150 किलोमीटर है। नजदीकी रेलवे स्टेशन बापूधाम मोतिहारी, बेतिया व सुगौली है जहां सड़क मार्ग से होकर आधे से एक घण्टे के भीतर यहां श्रद्धालु पहुंच सकते हैं।

सम्पूर्ण विश्व में पूजित है शिवलिंग का साकार स्वरूप।

- **ज्योति स्तम्भ के रूप में हुआ था शिवलिंग का प्रादुर्भाव।**
- **अखंड आनन्द के प्रदाता है भोले शंकर।**

सम्पूर्ण पृथ्वी लिंगमय है सबसे पहला शिवलिंग ज्योति स्तम्भ स्वरूप है। शैवधर्म भारत ही नहीं विश्व का एक व्यापक धर्म रहा है और रहेगा क्योंकि यह सरलता से मनुष्य को प्राण वायु के साथ असीम शांति प्रदान करता है। इसलिए पत्थर को शिव लिंग के रूप में पूजने तथा जहां भी वैसा पत्थर स्थापित देखा जाए उसे मंदिर तथा पवित्र स्थान की मान्यता देने की व्यापक व अद्भुत परम्परा आदि काल से चली आ रही है। शिवलिंग की पूजा भारत में ही नहीं विश्व के हर क्षेत्र में आदिकाल से होती चली आ रही है।

'शिव' शब्द 'वश कांतौ' धातु से बना है जिसका तात्पर्य होता है कि—जिसको सब चाहते हैं, उसी का नाम शिव है। शिव अखंड आनन्द के स्रोत होने के कारण सभी के द्वारा चाहे जाते है। शिव का अर्थ आनन्द भी होता है इसी अर्थ की अनुकूलता को लेकर इनको 'शंकर' भी कहा जाता है क्योंकि 'शंकर' अर्थात आनन्द जबकि 'शंकर' अर्थात करने वाला होता है। शिव साकार व निराकार दोनों ही रुपों में पूजित है। निराकार रूप में उनका लिंग जबकि साकार रूप में विग्रह (मूर्ति) पूजित है। प्राचीन भारत में शिव पूजा का प्रादुर्भाव हड़प्पा निवासियों के समय से ही माना जाता है शिव लिंगके विविध रूप मानवता कीर्ति लिंगायत पशुपति आदि इसी समय से प्रचलन में आ चुके हैं यही पीछे चलकर हिंदू के अलग-अलग धर्मिक संप्रदायों के रूप में प्रमु स्थान ग्रहण कर लिया। भारत के मूल निवासियों जंगली कबीलो तथा रजतर जातियों के द्वारा भी शिवलिंग के रूप में पाषाण की पूजा करने की परंपरा चली आ रही है। मार्शल ने तीन शिर वाली मूर्ति को पाशुपति शिव माना है। व्हीलर ने कहा है कि हड़प्पा सभ्यता व सिंधु सभ्यता काल में भी शिव लिंग पूजा किये जाते थे। डॉ. सुधकर चट्टोपाध्याय ने सिंधु घाटी में प्राप्त मोहरों जिनपर शिव के पाँच मुख दिखाई पड़ते हैं के आधार पर शिव के पाँच अवतार की चर्चा की है। प्रारंभिक तांत्रिक साहित्य में वर्णित सिंधु नदी के पश्चिम में स्थित गंधार प्रदेश के तंबरु नामक गंधर्व की ओर संकेत किया है और इसे शिव का दूसरा नाम 'तंबरू' अर्थात शिव बताया है। द्रविड़ों के शिव पूजा का आधार 'सिवन' शब्द से प्रचलित था जो संस्कृत भाषा के शिव शब्द से ही

लिया गया है। 'सिवन' का अर्थ काला होता है इसी आधार परवैदिक साहित्य में शिव के लिए 'नील निलोहित' का उल्लेख हुआ है। तमिल साहित्य में भी 'सेम्बू' का प्रचलन था जिस आधार पर 'शम्भू' शब्द बना है। अर्थात शिव नामक देवता के आधार पर द्रविण के उद्‌भव की बात बताई गई है। इसी विस्तार के परिणाम स्वरूप आर्यों ने भी यह स्वीकार कर लिया होगा, जिसके कारण पीपल की पूजा, लिंग की पूजा, उत्तर दिशा को पवित्र मानकर शव को उसी ओर लिटाना, वेदी बनाकर यज्ञ करना आदि संस्कृति की परंपरा हमारे समाज में रची बसी है।

शिव महापुराण में शिवलिंग की उत्पत्ति का वर्णन स्तंभ के रूप में किया गया है जो अनादि व अनंत है और जो समस्त कारणों का कारण है। लिंगोद्‌भव कथा में परमेश्वर शिव ने स्वयं को अनादि व अनंत अग्नि स्तंभ के रूप में ला कर भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु को अपना ऊपर व निचला भाग ढूंढने के लिए कहा और उनकी श्रेष्ठता तब साबित हुई जब वे दोनों अग्नि स्तंभ का ऊपर व निचला भाग ढूंढ नहीं सके। शिवलिंग के ब्रह्मांडीय स्तंभ की व्याख्या का समर्थन लिंग पुराण भी करता है। लिंग पुराण के अनुसार शिवलिंग निराकार ब्रह्मांड वाहक है—अंडाकार पत्थर ब्रह्मांड का प्रतीक है और पीठम् ब्रह्मांड को पोषण व सहारा देने वाली सर्वोच्च शक्ति है। इसी तरह की व्याख्या स्कन्द पुराण में भी है, इसमें यह कहा गया है "अनंत आकाश (वह महान शून्य जिसमें समस्त ब्रह्मांड वसा है) शिवलिंग है और पृथ्वी उसका आधार है। यह भी कहा गया है कि समय के अंत में, समस्त ब्रह्मांड और समस्त देवता व ईश्वर शिवलिंग में विलीन हो जाएँगें।"

शिव से तात्पर्य कल्याणकारी और पालक है।

ईशान संहिता के अनुसार, फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि सोमवार को शिवलिंग का प्राकट्‌य हुआ था।

अर्थात "चतुर्दश्याम सोमवारे च शिवलिंगम वरंभूवि"।

ब्रह्मा विष्णु के निवेदन पर भगवान शिव द्वादश व उप ज्योतिर्लिंग के रूप में विभक्त हो गये।

त्रेतायुग में भी रामायण के प्रसंगानुसार राम लक्ष्मण को जब विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए साथ लेकर जा रहे थे तो उनको शिव अस्त्रों की आराधना करके ही दो दिव्यास्त्र दिलाया था जिसको काटने वाला दूसरा कोई अस्त्र नहीं था। स्वयं भगवान श्रीराम के द्वारा रावण के आचार्यत्व में रामेश्वरम शिवलिंग की स्थापना का विधान मिलता है। महाभारत के अनेक पर्वों में शिव की कृपा से अर्जुन कृष्ण अश्वत्थामा आदि को अनेक शस्त्र प्राप्त होने का ज्ञान प्राप्त होता है। महाभारत काल में भी रुद्र शिव तथा शिवलिंग की उपासना प्रचलित थी। वन पर्व में भी अर्जुन द्वारा हिमालय जाने का वर्णन मिलता है जहाँ किरात को शिव के रूप में बोध ज्ञान होने व मिट्टी के शिवलिंग की पूजा करने की चर्चा की गई है। द्रोण पर्व में अर्जुन को पाशपत अस्त्र प्राप्त करने बाद ही समस्त शत्रुओं के नाश करने की शक्ति प्राप्त हुई थी। अश्वत्थामा ने भी शंकर की आराधना की और उनसे एक खड्‌ग प्राप्त किया और

स्वयं शिव उनके शरीर में प्रविष्ट कर गए। इस प्रकार रामायण तथा महाभारत काल में भी शिव लिंग के एक श्रेष्ठ देवता के रूप में पूजित होने का प्रमाण मिलता है। हरिवंश पुराण में भी हरिहर की भावना को स्थान दिया गया है। इसके साथ ही वैदिक काल, संहिता काल व उपनिषद काल में भी रुद्र लिंग का विचार प्राप्त होता है । उपनिषद तो शिव को 'मायी' अर्थात महेश्वर कहता है। पुराण काल में भी शैवधर्म के मत को विकसित होने का प्रमाण मिलता है। महेश्वर संप्रदाय, पाशुपत संप्रदाय, कश्मीरी सम्प्रदाय का भी प्रचार प्रसार भारत क्षेत्र में पाया जाता है। मैसूर, कर्नाटक तमिलनाडु आदि क्षेत्र भी शैव सिद्धांत के प्रचार क्षेत्र का केंद्र रहा है। गुप्त काल में भी शैवधर्म एक अत्यंत विकसित धर्म था। किसी भी गुप्त शासक ने शैवधर्म का विरोध किया हो ऐसा किसी भी स्रोत से ज्ञात नहीं होता। यही कारण है कि गुप्त शासको के काल में शिवलिंगों की प्राप्ति भी विभिन्न स्थानों से हुई है जो अधिकांश लेख के अध्ययन से स्प्ष्ट होता हैं। गुप्त काल के शिव मंदिरों में विविध प्रकार के शिवलिंगों की स्थापना किए जाने का भी विधान मिलता है। साहित्यिक ग्रन्थों में भी शैवधर्म के प्रचार प्रसार पर प्रकाश पड़ता है। गुप्तकालीन साहित्यकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान कालिदास का है जो शिव के अनन्य भक्त थे। उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर के प्रति उनकी घनिष्ठ श्रद्धा थी जिसका ज्ञान उनके काव्य मेघदूत से मिलता है। इसमें उन्होंने बड़े ही आस्था से महाकाल के मंदिर का वर्णन व स्तुति की है। उनकी दूसरी कीर्ति है कुमार संभव जिसमे देवताओं की प्रेम क्रीड़ा का वर्णन है। यह काव्य हिमालय की पुत्री पार्वती और शिव के प्रेम से प्रारंभ होकर उनके विवाह तथा कुमार कार्तिकेय के जन्म के साथ समाप्त होता है। उनकी अन्य कृतियां रघुवंश, अभिज्ञान शाकुंतलम् आदि सभी शिव की उपासना से प्रारंभ होती है इनमें शिव के विभिन्न रूपों तथा गुणों की चर्चा की गई है। कुमार संभव में जगत पिता शंकर व माता पार्वती की वंदना की गई है। अत: यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अनादिकाल से केवल भारत में ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्वसृष्टि में साकार व निराकार स्वरूप शिवलिंग की पूजा होती चली आ रही है।

नन्दीश्वर महाराज की स्थापना गर्भगृह से बाहर ही क्यों?

- **नन्दी के बिना सोमेश्वरनाथ की कृपा सम्भव नहीं।**
- **शिव और भक्तों के बीच सेतु का कार्य करते हैं नन्दीश्वर जी महाराज।**

अरेराज का सोमेश्वरनाथ मन्दिर आदि काल से ही आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र रहा है। इस पौराणिक स्थल पर भक्तों को आध्यात्मिक सन्तुष्टि के साथ-साथ जीवन का ज्ञान भी प्राप्त होता है। मन्दिर के आंगन में गर्भगृह के समक्ष पच्चीस फीट ऊंचे त्रिशूल के साथ नन्दीश्वर महाराज की ढाई तीन फीट की भव्य प्रतिमा स्थापित है जिसका दर्शन करने के साथ भोले भंडारी का जलाभिषेक कर श्रद्धालु बाबा सोमेश्वरनाथ की कृपा प्राप्त करते हैं। धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि सत्य ही शिव है और शिव ही सुन्दर है। देश के उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम तक शिव की पूजा करने की परम्परा सदियों से चली आ रही है। वेद में शिव को रूद्र कहा गया है। रूद्र अर्थात् 'रुत' यानि कि सभी दु:खों का हरण करने वाला। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही शिवमय है। भोलेनाथ शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवता तो हैं लेकिन यदि नन्दी जी महाराज का दर्शन कर शिव को एक लोटा जल अर्पित कर दिया जाता है तो सोमेश्वरनाथ भक्तों के सभी दु:खों को हर लेते हैं। नन्दी महाराज भगवान शिव के प्रधान अनुचर एवं भक्त हैं। नन्दी के बिना शिव तत्त्व को समझना कठिन है। नन्दी का शाब्दिक अर्थ 'प्रसन्नता' है। आश्चर्यजनक किंतु सत्य है कि शिव परिवार का महत्वपूर्ण व अभिन्न अंग होने के बावजूद भी असीम शक्तियों के स्वामी नन्दीश्वर जी महाराज शिव परिवार के साथ नहीं होकर गर्भ गृह के बाहर ही क्यों बिराजते हैं? इसके पीछे भी रहस्य है। नन्दीजी महाराज गर्भ गृह के बाहर खुली आंखों की अवस्था में समाधि की स्थिति में बैठे होते हैं लेकिन उनकी दृष्टि शिव की ओर ही सदैव बनी रहती है। महाभारत के रचयिता वेदव्यास के अनुसार खुली आंखों से ही आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। शिव दर्शन करने से पूर्व नन्दी का दर्शन करना शास्त्रसम्मत बताया गया है ताकि व्यक्ति अपेन अहंकार सहित समस्त बुराईयों से मुक्त होकर मद-मोह, छल-कपट और ईर्ष्या जैसे अपने विकारों को नंदीश्वर के चरणों में ही त्याग कर ही वह शिव का सान्निध्य व कृपा प्राप्त करें। ऐसी मान्यता है कि नंदीश्वर महाराज का दर्शन कर शिव का जलाभिषेक व दर्शन मात्र से ही मनुष्य के समस्त विकार दूर हो जाते हैं। नन्दी के सींग विवेक और वैराग का प्रतीक है। नन्दी की कृपा के बिना शिव की कृपा सम्भव ही नहीं असम्भव है। दाहिने हाथ के अंगूठे और तर्जनी से नन्दी के सिंग को

स्पर्श करते हुए गर्भगृह व शिव का दर्शन मात्र कर लेने से ही प्राणी समस्त विकारों से दूर हो जाता है। आपने मंदिरों में अक्सर देखा होगा कि कुछ लोग नन्दीश्वर महाराज के कान के पास जाकर कुछ गुनगुनाते हैं। यह बुदबुदाना और कुछ नहीं एक तरह से बाबा के प्रति सिफारिश की गुहार लगाते हैं ताकि नंदी महाराज के जरिए भक्त अपनी कामना महादेव भोले तक पहुंचा सके। भोले बाबा अपने नंदी की बात को कभी टालते नहीं हैं। जबकि शिव और भक्तों के बीच उस सेतु का कार्य करते हैं जिनके सहारे व्यक्ति शिव की शरण में पहुंचकर उनकी कृपा का पात्र बन जाता है।

नन्दीश्वर जी महाराज गर्भ गृह से बाहर क्यों? इस संदर्भ में शिव पुराण के अनुसार ऋषि सनत्कुमार ने नन्दी से पूछा कि आप भगवान शिव के अश से कैसे उत्पन्न हुए और आपने शिवत्व को कैसे प्राप्त किया? नन्दीजी महाराज ने कहा कि मेरे पिता ऋषि शिलाद की तपस्या से प्रसन्न होकर महादेव ने उन्हें वर देते हुए कहा था कि हे तपस्वी ब्राह्मण! मैं तुम्हारे घर आयोनिज अमर पुत्र के रूप में प्रकट होकर शिव तत्व युक्त नन्दीश्वर के रूप में तीनों लोक में मेरे सदृश ही पूजित हो जाऊँगा। नन्दी के रूप में मेरे दर्शन मात्र से ही प्राणी को कैलाश लोक का दर्शन करने का फल प्राप्त होगा। मेरे सान्निध्य में आकर यदि भक्तिभाव से मेरे गर्भगृह की ओर निहार देता है तो उसे पूर्ण दर्शन का फल प्राप्त हो जाता है।

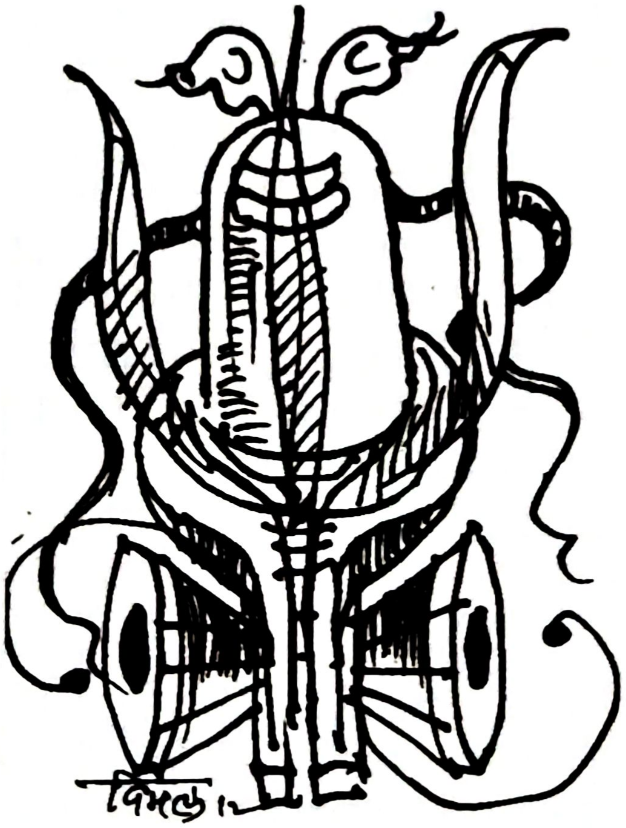

आदिकाल से चली आ रही है वसंत पंचमी की पांचदिवसीय कांवर यात्रा

- **खुले आसमान के नीचे कांवरिये गुजारते हैं माघ का ठंड।**
- **कांवरियों को करने होते हैं कठोर व्रत का अनुपालन।**
- **पाँच दिवसीय कांवर यात्रा करने के बाद बाबा दरबार में हाजिरी लगाने पहुँचते हैं शिवभक्त।**
- **बाबा को गुलाल चढ़ा फगुआ की ताल बजा मनाते हैं वसंतोत्सव।**

बिहार के मानचित्र पर अपनी पौराणिक, आध्यात्मिक केन्द्र स्थल के रूप में रेखांकित है सोमेश्वरनाथ महादेव मंदिर अरेराज। सूखे कुएँ में स्थापित आदिकालीन कामना परक पंचमुखी शिवलिंग के उपर कांवर यात्रा कर जलाभिषेक करने के लिए विभिन्न आध्यात्मिक अवसरों पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। साल में सात मेले का आयोजन किये जाने की प्राचीन परम्परा यहां अनादि काल से चली आ रही है। आध्यात्मिक मास माघ शुक्ल पंचमी का यह मेला साल का पहला मेला है जहाँ विभिन्न जिलों से पधारे शिवभक्त सैकड़ों किलोमीटर की कठिन कांवर यात्रा कर बाबा सोमेश्वरनाथ के शिवलिंग का जलाभिषक करते हैं। ये कांवरिये बसन्तपंचमी के अवसर पर वाल्मीकिनगर त्रिवेणी, गंगा सरयुग संगम डोरीगंज छपरा, गंगा गण्डक संगम पहलेजा घाट व प्रयागराज आदि पवित्र नदियों से जलबोझी कर यहां पहुंचकर सोमेश्वनाथ का जलाभिषेक करते हैं। माघ मास की मौनी अमावस्या को त्रिवेणी आदि विभिन्न नदियों के संगम से जलबोझी कर नंगे पांव पैदल कांवर यात्रा पूरी कर बबा सोमेश्वनाथ के दरबार में पहुँचकर खुले आसमान के नीचे रात गुजारकर अगले दिन बसन्त पंचमी के दिन बाबा का जलाभिषेक करने की आदिकालीन परम्परा यहां आज भी देखने को मिलती है। जलबोझी करने से पूर्व ये कांवरिये बाबा का हाजिरी लगाने के साथ कठिन कांवर यात्रा की शुरूआत करते हैं। अगले दिन बोलबम हरहर महादेव के उद्घोष के साथ शिवलिंग पर अबीर गुलाल चढ़ा दरबार से ही फगुआ गाकर बसंतोत्सव मनाते हैं। हरिद्वार, प्रयागराज आदि संगम घाट से जलबोझी करने वाले कांवरियों के लिए तो यह यात्रा पंद्रह दिवसीय कांवर यात्रा बनकर रह जाती है।

इस कांवर यात्रा के द्वारा विभिन्न नदियों के जल से सूखे कुएँ में स्थापित कामना परक शिवलिंग का जलाभिषेक करने से अश्वमेघ यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कहा गया है कि कांवर परम्परा की शुरूआत आज से नहीं बल्कि त्रेता व द्वापर युग से ही हुई है।

आस्था एवं विश्वास से जुड़ी इस कांवर प्रथा की शुरूआत बिहार राज्य के मिथिलांचल क्षेत्र से हुई है। ऐसी मान्यता है कि भगवान श्री राम अपनी धर्म भार्या सीता के साथ जनकपुर से अयोध्या जाने के क्रम में कांवर यात्रा कर सोमेश्वर नाथ महादेव का जलाभिषेक किया था। द्वापर काल में भी धर्मराज युधिष्ठिर भी रानी द्रौपदी व पांडव पुत्रो के साथ कांवर यात्रा कर अरेराज बाबा का जलाभिषेक व श्रृंगार पूजन किया था।

शास्त्रोक्त मान्यता के अनुसार–

"स्कन्धे च कामरं धृत्वा बम बम प्रोच्य क्षणे क्षणे।
पदे पदे अश्वमेधस्त अक्षय पुण्यमसुते।।"

अर्थात् कंधे पर कांवर धारण कर बम बम, बोलबम का जय घोष लगाता जो चलता है उसे अश्वमेध यज्ञ करने का अक्षय फल प्राप्त होता है। कांवर से गंगा जल चढ़ाने से भगवान शिव काफी प्रसन्न होते हैं। भगवान शिव धूप दीप नैवेद्य या फल फूल से इतने प्रसन्न नहीं होते जितना की कांवर जल यात्रा से प्रसन्न होते हैं। यह लंबी अध्यात्मिक यात्रा के पल पल प्रतिपल से शिव प्रसन्न होते हैं। जब जब कांवरिया बोल बम का उच्चारण करते हैं तब तब बाबा के दरबार में भक्तों की हाजिरी स्वीकार होती है।

यह भी कहा जाता है कि कांवरियों द्वारा बोल बम का शंखनाद करने से इतनी ऊर्जा उत्पन्न होती है कि बाबा का दरबार गुंजायमान हो उठता हैं इस अद्‌भुत कांवर यात्रा में शामिल सदस्यों को श्रद्धा के साथ 'बम' के नाम से उद्‌बोधन किया जाता है।

कांवर की विशेषता

बांस बना वह कांवर जिसके माध्यम से जलबोझी करने के बाद गंगाजल को बाबा के द्वार तक ढोकर लाया जाता है। जब तक जलाभिषेक की प्रक्रिया पूरी नहीं कर ली जाती है जब तक यह कांवर बांस का नहीं होकर यह धर्म दंड के समान होता है। कांवर में जो जल भरकर रस्सी बांधी जाती है उसका भी एक धार्मिक महत्व है। साधारण कांवर या गोलाकृति में तीन रस्सी बंधी हुई होती है किंतु जल के लिए प्रयुक्त कांवर में चार रस्सी बांधने का शास्त्रोक्त विधान है। दोनों शिरे की रस्सियां सत्य, शौच, दया, दान, ब्रह्मचर्य, नियम ध्यान व लोभमुक्ति का परिचायक होता है।

सामान्यता कांवरिया बम तीन प्रकार के होते हैं लेकिन हिंदू धर्म ग्रंथों में सात तरह के कांवरियों का उल्लेख मिलता है।

01. साधारण कांवरिया बम

इस तरह के कांवरिया किसी स्वच्छ शुद्ध पात्र में जल भरकर सामान्य गति से उठते बैठते सोते रास्ते में आराम करते अरेराज धाम पहुंचते हैं। इनकी यात्रा की कोई अवधि निश्चित नहीं होती है। साधारण कांवरिया बम समय बंधन से मुक्त होकर बाबा के दरबार में पहुंचकर जलाभिषेक करते हैं।

02. खड़ेश्वर बम कांवरिया

यह कांवरिया अपने कंधे से कांवर को उतारकर कहीं भी नहीं रख सकते यदि भूख प्यास लग जाए या फिर मल मूत्र त्यागने की आवश्यकता हो तो किसी अन्य व्यक्ति के कांधे पर कांवर देकर अपना कार्य करते हैं। खड़ा बम कांवरिया अक्सर अपने साथ एक दो सहायक लेकर चलते हैं और जब भी जरूरत होती है तब सहायक को कांवर देकर आराम करते हैं।

03. डाककांवरिया बम

अपने पात्र में गंगाजल भरकर लेने के बाद डाक बम संकल्प करते हैं कि लगातार चलते हुए 24 घंटों के अंदर बाबा का जलाभिषेक करना है। इनके पास कांवर नहीं होता परन्तु जलपात्र में गंगाजल भरकर सीने से चिपकाए द्रुतगति से बाबा धाम अरेराज की ओर चलते हैं। रास्ते में भैरवबम (कुत्ता) इनसे दूर रहे इसके लिए यह अपने हाथों में डंडा तथा टॉर्च भी रखते हैं। डाक बम मल मूत्र आदि पर नियंत्रण रखने का बहुत पहले से कठोर अभ्यास किए रहते हैं ताकि रास्ते में परेशानी नहीं हो सके। वह चलते-चलते स्नान व भोजन भी करते हैं।

04. मौन कांवरियाबम

छठी शताब्दी में वृहदयरायण द्वारा रचित 'शिव स्तुति' में ऐसे शिव भक्तों का उल्लेख किया गया है जो शिवलिंग की पूजा करने के लिए शुद्ध गंगाजल अपने पात्र में भरकर व कंधे पर कांवर रखकर मौन यात्रा करते हैं। यह कांवरिया जलाभिषेक करने तक अपना मुंह बंद ही रखते हैं। वर्तमान समय में अरेराज देवघर व वाराणसी में यह परंपरा आज भी कायम है।

05. शयन कावरिया बम

ऐसी अविवाहित कन्याएं जो सावन के प्रति सोमवार को अपनी आंखें बंद कर बाबा के दरबार में पहुंचती है तथा रास्ते में आंखें बंद कर सोने का उपक्रम करती हुई किसी सहयोगी महिला के साथ चलती है। इन्हें शयन कांवरिया बम कहा जाता है। कुंवारी कन्या शयन बम का दृढ़ संकल्प लेती हैं तथा इन्हें मनोवांछित फल प्राप्त होता है। वैवाहिक विलंब को दूर करने के लिए भी यह कांवर यात्रा कुंवारी कन्याओं के द्वारा करने का विधान मिलता है।

06. माहवारी कांवरिया बम

प्रत्येक महीने के निर्धारित तिथि व दिन को अपने कंधे पर कांवर उठा कर साधारण बम की तरह ही पांव पैदल चलकर शिव को गंगाजल चढ़ाने के लिए जो भक्त अरेराज धाम के लिए निकलते हैं तो इसे मासिक कांवरिया बम कहा जाता है। आजकल के युग में धनी लोग अन्य व्यक्ति को धन देकर

अपने बदले में माहवारी बम तैयार कर पुण्य कमाते हैं।

07. शिव कांवरिया बम

गरीब लोग जो शिव के द्वार तक नहीं जा सकते वह अपने घर में ही मिट्टी का शिव लिंग बनाकर सात फेरे लगाते हैं। ये शिव कांवरिया बम कहलाते हैं वह शिवलिंग पर शुद्ध जल चढ़ा कर अपना सोमवारी व्रत व उपवास रखते हैं किन्तु इन दिनों फलहार, दुग्ध पान इत्यादि की परंपरा भी बन गई है।

कांवरिया भक्त के होते हैं कुछ खास नियम

- जलाभिषेक करने तक कांवरियों को नाखून, बाल बनाना तथा साबुन-कंधी का प्रयोग करना वर्जित होता है।
- कांवरियों को लघुशंका करते वक्त पानी लेकर जाना पड़ता है लेकिन शौच के बाद उन्हें स्नान करना पड़ता है।
- कांवड़ यात्रा के दौरान जो कांवरिया खाना खाते हुए जाते हैं वह रोटी का उपयोग करते हैं।
- चावल खाने के बाद कांवरियों को स्नान करना पड़ता है।
- कांवरियों को अगर कांवर का कंधा बदलना होता है तो उसे चेहरे के ऊपर से नहीं बल्कि पीछे से दूसरे कंधे पर जाना पड़ता है।
- विश्राम के बाद जब कांवर उठाया जाता है तो उसे पहले शिवभक्त पांच बार कान पकड़ कर दण्ड स्वरूप उठक बैठक लगाते हैं।
- बिना रुके 24 घंटे के अंदर जल चढ़ाना होता है।
- खंडेश्वरी बम खड़ा कांवरिया अपने कांवर को कंधे से नीचे नहीं उतारते अगर उन्हें विश्राम करना होता है तो वह अपना कांवर दूसरे के कंधे पर दे देते हैं। कांवरिया पथ में कांवर रखने वाले लोग भी पैसे पर मिल जाते हैं।
- जिस जगह पर कांवर रखा जाता है उससे आगे कांवरिया विश्राम नहीं करते गंगाजल सिर्फ भैरव बम 'श्वान' से अपवित्र होता है।
- बाबा दरबार में शिवांश अन्न चढ़ाने से भगवती अन्नपूर्णा का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

बाबा के दरबार में पहुंचकर किसान शिवभक्त अपने साथ लेकर आये खरीफ फसल की बाली को चढ़ाकर समृद्ध कृषि व उन्नत उपज की कामना करते हैं। यह अद्‌भुत परम्परा अन्य धार्मिक नगरी में देखने को नहीं मिलती है।

शिव की आराधना का पर्व है महाशिवरात्रि

शिव और शक्ति के मिलन का एक महान पर्व है महाशिवरात्रि। यह पर्व भक्तों को अपनी ज्ञानेन्द्रियों को नियंत्रित करने में शक्ति प्रदान करता है साथ ही काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष और अभिमान आदि मनोविकारों को रोकता है। कहा गया है कि महाशिवरात्रि के दिन व्रत उपवास रखने और भगवान शिव की सच्चे मन से उपासना करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। महाशिवरात्रि के दिन सोमेश्वरनाथ मन्दिर अरेराज में जलाभिषेक कर कामना पूर्ति करने की परम्परा आदिकाल से ही होती चली आ रही है। शिव पुराण के अनुसार जो सच्चे मन से इस व्रत को करता है उसकी सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। इस व्रत का अनुपालन आध्यात्मिक अर्थ में करने से परमात्मा शिव का वरदान सहज रूप में प्राप्त हो जाता है। शिवरात्रि मनाने की आध्यात्मिक विधि अत्यंत सरल और सहज है। परमात्मा शिव को प्रसन्न करने के लिए और उनसे साकारात्मक शक्ति प्राप्त करने के लिए सूर्योदय से पहले उठकर शिव के सत्य स्वरूप के ध्यान में कुछ पल बिताए। मन बुद्धि को अंतरात्मा और परमात्मा के ज्योति स्वरूप के प्रति मन को एकाग्र करें और श्रेष्ठ शिव के ज्ञान गुण और कर्तव्यों का स्मरण करने मात्र से ही सम्पूर्ण व्रत को करने का फ़ल प्राप्त होता है ।

स्कंद पुराण में कहा गया है कि शिवरात्रि के समान दूसरा कोई और व्रत नहीं है। नगर खंड में ऋषियों के पूछने पर सूत जी कहते हैं की माघ मास की पूर्णिमा के उपरांत कृष्ण पक्ष में रात्रि में जो चतुर्दशी तिथि आती है उस रात्रि को ही शिवरात्रि कहा जाता है। इस रात्रि को शिव समस्त शिवलिंगों में संक्रमण करते हैं। कलयुग में यह व्रत सब पापों का नाश कर मनोकामनाएं पूर्ण करता है। इस रात्रि में जितने भी चल या अचल शिवलिंग है उन सब में भगवान शिव की शक्ति का संचार होता है। इसलिए तो इस रात्रि को शिवरात्रि कहा जाता है।

कुछ लोग शिवलिंग का अर्थ शिव की जननेन्द्रिय समझते हैं किंतु यह अर्थ ठीक नहीं है। संस्कृत में 'लिंग' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है अर्थात "लिंगयते याज्ञते इतिलिंगम्" इस व्युत्त्पि के अनुसार लिंग शब्द का अर्थ ज्ञापक या बोधक यानि ठीक से पहचान करने वाला। शिवलिंग की पूजा का उद्देश्य शिवलिंग में व्याप्त अंतर्यामी शिव की उपासना करना है। भगवान शिव पौराणिक देवता ही नहीं बल्कि पांच देवों में भी मुख्य देव हैं इसलिए उन्हें महादेव कहा जाता है । मंगलकारी शिव की पूजा के लिए फाल्गुन मास को उत्तम माना गया है क्योंकि पतझड़ के बाद नव पल्लव का प्रादुर्भाव फाल्गुन मास में ही होता है। शिवरात्रि का उत्सव भी फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की अर्धरात्रि के

समय मनाया जाता है क्योंकि चतुर्दशी की अर्धरात्रि को प्रकाश स्तंभ के रूप में शिवलिंग का प्रादुर्भाव हुआ था। महाशिवरात्रि को शिव की प्रिय वस्तुएं आक, धतूरा, कनेर, बिल्व पत्र आदि शिव पर चढ़ाये जाते है। इनमें बिल्वपत्र सबसे मुख्य है क्योंकि यह शिव को अधिक प्रिय है। शिवरात्रि को शिव लिंग पर विल्व पत्र चढ़ाने का इतना महत्व है कि एक हिंसक भील द्वारा अनजाने में ही शिवलिंग पर विल्वपत्र गिरा देने से भगवान आशुतोष शिव प्रसन्न हो गए थे और उस भील को सांसारिक बंधनों से मुक्त कर शिवलोक प्रदान किया था।

शिवजी को धतुरा चढ़ाने का भावयह है कि अपनी समस्त दुष्प्रवृत्तियों व मनोविकारों को परमात्मा शिव के चरणों में अर्पित करना। शिवलिंग पर जल और दूध अर्पण करने का भाव है कि हम सद्‌गुणों को अपनाये तथा दुर्गुणों को त्यागने का दृढ़ संकल्प करें। शिवरात्रि पर उपवास करने का मतलब सिर्फ एक दिन भोजन का त्याग नहीं है बल्कि मन और बुद्धि से सदा परमात्मा शिव यानि कि उनके समीप वास करना है। अत: स्पष्ट है कि अगर भगवान शिव को हम सदा ध्यान में रखेंगे तो यह सिद्ध है कि उनकी कृपा ध्यान हमपर भी सदैव बनी रहेगी।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह राम मंदिर अयोध्या
श्री मोहन भागवत जी सरसंघचालक का उद्बोधन

हमारे भारत का इतिहास पिछले लगभग डेढ़ हजार वर्षों से आक्रांताओं से निरंतर संघर्ष का इतिहास है। आरंभिक आक्रमणों का उद्देश्य लूटपाट करना और कभी-कभी (सिकंदर जैसे आक्रमण) अपना राज्य स्थापित करने के लिए होता था। परंतु इस्लाम के नाम पर पश्चिम से हुए आक्रमण यह समाज का पूर्ण विनाश और अलगाव ही लेकर आए। देश-समाज को हतोत्साहित करने के लिए उनके धर्मिक स्थलों को नष्ट करना अनिवार्य था, इसलिए विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत में मंदिरों को भी नष्ट कर दिया। ऐसा उन्होंने एक बार नहीं, बल्कि अनेकों बार किया। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को हतोत्साहित करना था ताकि भारतीय स्थायी रूप से कमजोर हो जाएँ और वे उन पर अबाधित शासन कर सकें। अयोध्या में श्रीराम मंदिर का विध्वंस भी इसी मनोभाव से, इसी उद्देश्य से किया गया था। आक्रमणकारियों की यह नीति केवल अयोध्या या किसी एक मंदिर तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए थी। भारतीय शासकों ने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया, परन्तु विश्व के शासकों ने अपने राज्य के विस्तार के लिए आक्रामक होकर ऐसे कुकृत्य किये हैं। परंतु इसका भारत पर उनकी अपेक्षानुसार वैसा परिणाम नहीं हुआ, जिसकी आशा वे लगा बैठे थे। इसके विपरीत भारत में समाज की आस्था निष्ठा और मनोबल कभी कम नहीं हुआ, समाज झुका नहीं, उनका प्रतिरोध का जो संघर्ष था वह चलता रहा। इस कारण जन्मस्थान बार-बार पर अपने आधिपत्य में कर, वहां मंदिर बनाने का निरंतर प्रयास किया गया। उसके लिए अनेक युद्ध, संघर्ष और बलिदान हुए। और राम जन्मभूमि का मुद्दा हिंदुओं के मन में बना रहा।

1857 में विदेशी अर्थात ब्रिटिश शक्ति के विरुद्ध युद्ध योजनाएं बनाई जाने लगी तो उसमें हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर उनके विरुद्ध लड़ने की तैयारी दर्शाई और तब उनमें आपसी विचार-विनिमय हुआ। और उस समय गौ-हत्या बंदी और श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति के मुद्दे पर सुलह हो जाएगी, ऐसी स्थिति निर्माण हुई। बहादुर शाह जफर ने अपने घोषणापत्र में गौहत्या पर प्रतिबंध भी शामिल किया। इसलिए सभी समाज एक साथ मिलकर लड़े। उस युद्ध में भारतीयों ने वीरता दिखाई लेकिन दुर्भाग्य से यह युद्ध विफल रहा, और भारत को स्वतंत्रता नहीं मिली, ब्रिटिश शासन अबाधित रहा, परन्तु राम मंदिर के लिए संघर्ष नहीं रुका। अंग्रेजों की हिंदू मुसलमानों में 'फूट डालो और राज करो' की नीति के अनुसार, जो पहले से चली आ रही थी और इस देश की प्रकृति के अनुसार अधिक से अधिक सख्त होती गई। एकता को तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने संघर्ष के नायकों को अयोध्या में फाँसी दे दी और राम जन्मभूमि की मुक्ति का प्रश्न वहीं का वहीं रह गया। राम मंदिर के लिए संघर्ष जारी रहा।

1947 में देश को स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जब सर्वसम्मति से सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया, तभी ऐसे मंदिरों की चर्चा शुरू हुई। राम जन्मभूमि की मुक्ति के संबंध में ऐसी सभी सर्वसम्मति पर विचार किया जा सकता था, परंतु राजनीति की दिशा बदल गयी। भेदभाव और तुष्टीकरण जैसे स्वार्थी राजनीति के रूप प्रचलित होने लगे और इसलिए प्रश्न ऐसे ही बना रहा। सरकारों ने इस मुद्दे पर हिंदू समाज की इच्छा और मन की बात पर विचार ही नहीं किया। इसके विपरीत, उन्होंने समाज द्वारा की गई पहल को उध्वस्त करने का प्रयास किया। स्वतन्त्रता पूर्व से ही

इससे संबंधित चली आ रही कानूनी लड़ाई निरंतर चलती रही। राम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए जन आंदोलन 1980 के दशक में शुरू हुआ और तीस वर्षों तक जारी रहा।

वर्ष 1949 में राम जन्मभूमि पर भगवान श्री रामचन्द्र की मूर्ति का प्राकट्य हुआ। 1986 में अदालत के आदेश से मंदिर का ताला खोल दिया गया। आगामी काल में अनेक अभियानों एवं कारसेवा के माध्यम से हिन्दू समाज का सतत संघर्ष जारी रहा। 2010 में इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला स्पष्ट रूप से समाज के सामने आया। जल्द से जल्द अंतिम निर्णय के माध्यम से इस मुद्दे को हल करने के लिए आगे भी आग्रह जारी रखना पड़ा। 9 नवंबर 2019 में 134 वर्षों के कानूनी संघर्ष के बाद सुप्रीम कोर्ट ने सत्य और तथ्यों को पर ने के बाद संतुलित निर्णय दिया। दोनों पक्षों की भावनाओं और तथ्यों पर भी विचार इस निर्णय में किया गया था। कोर्ट में सभी पक्षों के तर्क सुनने के बाद यह निर्णय सुनाया गया है। इस निर्णय के अनुसार मंदिर के निर्माण के लिए एक न्यासी मंडल की स्थापना की गई। मंदिर का भूमिपूजन 5 अगस्त 2020 को हुआ और अब पौष शुक्ल द्वादशी युगाब्द 5125, तदनुसार 22 जनवरी 2024 को श्री रामलला की मूर्ति स्थापना और प्राणप्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया गया है। धर्मिक दृष्टि से श्री राम बहुसंख्यक समाज के आराध्य देव हैं और श्री रामचन्द्र का जीवन आज भी संपूर्ण समाज द्वारा स्वीकृत आचरण का आंदर्श है। इसलिए अब अकारण विवाद को लेकर जो पक्ष-विपक्ष खड़ा हुआ है, उसे खत्म कर देना चाहिए। इस बीच में उत्पन्न हुई कड़वाहट भी समाप्त होनी चाहिए। समाज के प्रबुद्ध लोगों को यह अवश्य देखना चाहिए कि विवाद पूर्णतः समाप्त हो जाये। अयोध्या का अर्थ है 'जहाँ युद्ध न हो', 'संघर्ष से मुक्त स्थान' वह नगर ऐसा है। संपूर्ण देश में इस निमित्त मन में अयोध्या का पुनर्निर्माण आज की आवश्यकता है और हम सभी का कर्तव्य भी है।

अयोध्या में श्री राम मंदिर के निर्माण का अवसर अर्थात राष्ट्रीय गौरव के पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह आधुनिक भारतीय समाज द्वारा भारत के आचरण के मर्यादा की जीवनदृष्टि की स्वीकृति है। मंदिर में श्रीराम की पूजा 'पत्रं पुष्पं फलं तोयं' की पद्धति से और साथ ही राम के दर्शन को मन मंदिर में स्थापित कर उसके प्रकाश में आदर्श आचरण अपनाकर भगवान श्री राम की पूजा करनी है क्योंकि 'शिवो भूत्वा शिवं भजेत् रामो भूत्वा रामं भजेत्' को ही सच्ची पूजा कहा गया है। इस दृष्टि से विचार करें तो भारतीय संस्कृति के सामाजिक स्वरूप के अनुसार— मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्।

आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पंडितः।

इस तरह हमें भी श्री राम के मार्ग पर चलने होगा।

जीवन में सत्यनिष्ठा, बल और पराक्रम के साथ क्षमा, विनयशीलता और नम्रता, सबके साथ व्यवहार में नम्रता, हृदय की सौम्यता और कर्तव्य पालन में स्वयं के प्रति कठोरता इत्यादि, श्री राम के गुणों का अनुकरण हर किसी को अपने जीवन में और अपने परिवार में सभी के जीवन में लाने का प्रयत्न ईमानदारी, लगन और मेहनत से करना होगा। साथ ही, अपने राष्ट्रीय जीवन को दे ते हुए सामाजिक जीवन में भी अनुशासन बनाना होगा। हम जानते हैं कि श्री राम-लक्ष्मण ने उसी अनुशासन के बल पर अपना 14 वर्ष का वनवास और शक्तिशाली रावण के साथ सफल संघर्ष पूरा किया था। श्री राम के चरित्र में प्रतिबिंबित न्याय और करुणा, सद्भाव, निष्पक्षता, सामाजिक गुण, एक बार फिर समाज में व्याप्त करना, शोषण रहित समान न्याय पर आधरित, शक्ति के साथ-साथ करुणा से संपन्न एक पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना, यही श्रीराम की पूजा होगी। इस भावना को अंतर्मन में स्थापित करते हुए अग्रसर हो.. जय सिया राम।

एक संस्मरण

व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी
ब्रह्मलीन महंत शिव शंकर गिरि जी महाराज

हंस व्यक्तित्व के निर्मल पुरुष, मानवता के पुजारी, आध्यात्मिक विरासत के धनी, तन-मन-धन से समर्पण की भावना, शुद्धता-सुचिता के प्रतीक श्री श्री 1008 ब्रह्मलीन महन्त शिव शंकर गिरि जी महाराज एक अद्वितीय महामानव थे, जिनका व्यक्तित्व गंगाजल के समान पावन, मलय पवन के सदृश्य सुरभियुक्त था। वे एक सच्चे साधक व मन से सोमेश्वरनाथ महादेव जी के पूजक थे। बाबा बड़े तेजस्वी व यशस्वी थे। ॠतुराज वसंत की तरह प्रकृतिपालक व जनता के सेवक थे। एक तरफ वे कर्ण की तरह दानवीर थे, तो दूसरी तरफ वे राजा हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी थे। वे जो कहते थे, उसको कर के दिखा देते थे। वे दूरदर्शी थे, कालजयी थे व सदा महामानव थे।त्याग की भावना उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। संचय की प्रवृति उनमें नामोनिशान नहीं थी। मंदिर की आमदनी को वे परहित की सम्पत्ति समझते थे। वे गरीबों के रक्षक, दीन-दुखियों के सहायक और असहायों की आवाज थे। उनके दरवाजे से कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटता था। पर हाँ! वे ढोंगी और गैरिक वस्त्रधारियों से हमेशा दूर रहते थे।

कोढ़ी-अपंग-दरिद्र-भिखारी-गलितांग-विकलांग और छोटे-छोटे बच्चों को खिलाने में उन्हें परमानन्द की अनुभूति होती थी। ब्रह्मलीन बाबा कहते थे "सब कुछ जब बाबा हैं, तो बाबा का है"। वे स्वहित से ज्यादा परहित पर ध्यान देते थे। दान की प्रवृत्ति उनके ऊपर सदैव हावी रहती थी। एक बार एक अंधा चकाचौंध का मारा बाबा के पास याचना की भावना से आया। किसी कारणवश वह गिर पड़ां बाबा के अंगरक्षकों ने उसे संभाला। पूछताछ से मालूम हुआ कि वह भिखारी मोतियाबिन्द से ग्रसित है। फिर क्या था ? बाबा उसी समय से दृढ़ प्रतिज्ञ हो गये, और अपने पूज्य गुरु महाराज के नाम पर वैद्यनाथ नेत्रदान शिविर का निःशुल्क आयोजन शुरू हो गया और उस भिखारी की खोयी हुई रोशनी वापस लौट गई।

बाबा शिव शंकर गिरि जी महाराज कम पढ़े-लिखे थे, किन्तु उनके हृदय में शिक्षा के पति अगाध स्नेह था। वे आजीवन मुखिया पद को सुशोभित करते रहे। साक्षर थे, शिक्षित नहीं। कभी-कभी किसी आवेदन पर मुखिया के हस्ताक्षर की जरूरत पड़ती थी। मुहर लगाना तो आसान था, परन्तु उनके लिए दस्तख करना थोड़ा जोखिम भरा काम था। फलतः महन्त की जगह 'महनी' शब्द का प्रयोग करते थे। कोई खास बात तो नहीं थी, लोग उस महनी को महन्त पढ़ लेते थे। यह

सुनकर बाबा थोड़ा झेप जाया करते थे बाद में उन्हें अक्षर ज्ञान भी हो गया और वे अब साक्षर से शिक्षित हो गये। बाबा एक ही परिसर में भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु संस्कृतोच्च विद्यालय, आधुनिकता के परिवेश को जीवित रखने के लिए सोमेश्वर उच्च विद्यालय, बच्चियों के उत्थान एवं मान-सम्मान की रक्षा हेतु सोमेश्वर-पार्वती कन्या उच्च विद्यालय एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए महन्त शिव शंकर गिरि डिग्री कॉलेज उनके कृतिस्तम्भ हैं। ब्रह्मलीन महन्त के सलाहकारों ने उन्हें इस तरह से उत्प्रेरित किया कि अरेराज के शिक्षा जगत में एक भूचाल आ गया। फलत: आज अरेराज पूर्वी चम्पारण में शिक्षा का महान केन्द्र बन गया है।

इतना ही नहीं, शिव मंदिर के उत्तर दिशा में तीस कमरों का दो मंजिला गेस्ट हाउस तथा शिव मंदिर से पूरब दिशा में एक भव्य दो मंजिला धर्मशाला का निर्माण बाबा का कृति स्तंभ है, जहां हजारों की संख्या में भक्तगण बिजली की रोशनी और पंखे की हवा में सुख की नींद सोते हैं। रेफरल अस्पताल की स्थापना एवं बिहार पर्यटन भवन के निर्माण के समय भूमि की कमी को दान देने का श्रेय सिर्फ और सिर्फ बाबा को ही जाता है। ब्रह्मलीन महन्त शिव शंकर गिरि जी महाराज के इन्हीं शुभकार्यों को देखकर बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र ने उनको उत्तर बिहार का मालवीय कहकर सम्बोधित किया था।

आज महाराज हम लोगों के बीच नहीं रहे फिर भी वे जन-जन के कंठहार बने हुए हैं।

"जब तक सूरज चाँद रहेगा।
ब्रह्मलीन महंत तेरा नाम रहेगा।।"

ब्रह्मलीन शिव शंकर गिरि की अन्य विशेषताएँ :

बाबा नेत्रदान, गोदान, भूमिदान, विद्यादान और हजारों के जीवन दाता रहे हैं। ये बालब्रह्मचारी थे तथा शुद्ध से अल्पाहारी थे। कभी कभी हफ्तों निराहार रह जाते थे। बाबा एक संत सन्यासी थे। वे गेरूआ वस्त्रधारी व सोमेश्वरनाथ महादेव के पुजारी थे। बाबा हाथी-घोड़ा व दुधारू गोपालन के बड़े शैकीन थे। वे स्वयं घुड़सवारी भी करते थे। जब बाबा कभी मठ पर जाते थे तो घोड़े हिनहिनाकर और हाथी सूंढ़ उठाकर उनका स्वागत करते थे। कोढ़ी-अपंग-दरिद्र-भिखारी-विकलांग-गलितांग-शिथिलांग व छोटे-छोटे बच्चों को मिठाई खिलाने में उन्हें परमानंद की प्राप्ति होती थी। बाबा तंत्र-मंत्र के भी ज्ञाता थे। इतना सब होने के बाद भी बाबा इस भौतिक संसार से 1988 को वाराणसी के तट पर सोमेश्वर नाम का स्मरण करते हुए सदा-सदा के लिए इस भौतिक संसार से देवलोक वासी हो गए।

संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है सोमेश्वरनाथ मन्दिर अरेराज

- **आस्था के दिव्य दर्शन का केंद्र है अरेराज धाम।**
- **भव्य सोमेश्वरनाथ मन्दिर साक्षी बनेगा उत्कर्ष का।**
- **सोमेश्वरनाथ डॉट कम से जुड़े और ग्रहण करे बाबा का आशीर्वाद।**
- **सोमेश्वरप्रसादम योजना से जुड़े हैं देश विदेश के शिवभक्त।**
- **महामण्डलेश्वर पद से विभूषित हो रविशंकर ने किया है बिहार को गौरवान्वित।**
- **आध्यात्मिक विकास की यात्रा की ओर सदैव अग्रसर हैं सोमेश्वरपीठाधीश्वर।**

श्रद्धालुओं के आस्था का केन्द्र सामेश्वरनाथ मन्दिर का विहंगम दृश्य हमारी मान्यताओं, प्रतीकों, संस्कृति के संरक्षरण का ऐतिहासिक उत्सव है। अपने सराबोर भावों के साथ भक्त यहाँ आस्था के दर्शन के साथ अतीत के गौरव को भी याद करते हैं। सोमेश्वरनाथ मन्दिर का सम्पूर्ण परिसर प्रतीक है हमारे संस्कृतिक का, प्राचीनताओं का, परम्पराओं का, उर्जा की गतिशीलता का एवम् आध्यात्मिक मान्यताओं का। सब देवों के देव आदिदेव, महादेव त्रिदेव स्वयं 'शिव' ही हैं। यहां सुखे कुए में विराजमान कामनापरक पंचमुखी शिविलंग पृथ्वी, जल, तेज, वायु व आकाश तत्व के रूप में सृष्टि का भरण-पोषण करते हैं। सामेश्वरनाथ का पुरातन मन्दिर अब नया स्वरूप व भव्यता का आकार लेने लगा है। मन्दिर प्रबंधन, स्थानीय प्रशासन व आस्थावान सर्वसमाज के प्रयास से सोमेश्वरनाथ मन्दिर का भव्य परिसर अब नए कलेवर के साथ श्रद्धालुओं के लिए मनमोहक सिद्ध होने लगा है।

संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है सोमेश्वरधाम

महामण्डलेश्वर व सोमेश्वरपीठाधीश्वर स्वामी रविशंकर गिरि जी महाराज के उत्तरदायित्व संभालने के साथ ही यह मन्दिर अब भव्यता के साथ संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर दिखने लगा है। शिवभक्तों की सुविधा का ख्याल करते हुए कई महत्वाकांक्षी योजनाओं को मूर्त रूप देने के साथ विभिन्न भावी योजनाओं को भी साकार करने की दिशा में मन्दिर प्रबंधन अग्रणी दिख रहा है। कॉरिडोर अरेराज के ड्रीम प्रोजेक्ट योजनाओं के अंतर्गत भव्य परिसर का सौंदर्यीकरण व चाहरदिवारी का निर्माण कार्य कराया गया है। महिला पुरुष श्रद्धालुओं के लिए ब्रेकेटिंग व शेड का निर्माण भी कराया गया है। दर्शन को लेकर उमड़ती भीड़ को देखते हुए अरघा द्वारा जलार्पण की सुविधा प्रदान की गई है। शिव दरबार मे ऑनलाइन बुकिंग के आधार पर पूजा अर्चना व श्रृंगार पूजा का लाभ भक्तों को प्राप्त हो रहा है। गर्भगृह के समीप इक्कीस फीट के त्रिशूल के साथ नन्दीश्वर महाराज की ढाई से तीन फीट की प्रतिमा का दर्शन कर भक्त कामना की सिद्धि के साथ आशीर्वाद प्राप्त करते दिख रहे है। देश विदेश के भक्तों को डाक द्वारा सोमेश्वरप्रसादम की सुविधा मुहैया कराई गई है। शाकम्भरी पुष्पवाटिका के देववृक्ष परिवार में रुद्राक्ष, चंपा, चंदन व सिंदूर सहित विहित पुष्पादि के वृक्ष भक्तों का बरबस मन मोह रहे है।

महिला पुरुष श्रद्धालुओ के लिए अलग अलग ब्रेकेटिंग, शुद्ध पेयजल,सुलभ कम्प्लेक्स, स्नानागार एवं तीर्थ यात्री विश्रामालय सहित शुद्ध पेयजल की व्यवस्था भी उपलब्ध कराई गई है। पार्वती सरोवर में स्नानघाट के साथ नौका विहार सहित आध्यात्मिक शान्ति के प्रबंध भी किये गये हैं।

शाकम्भरी पुष्पवाटिका में ध्यानस्थ शिव प्रतिमा व तिलावे नदी तीर्थ में नन्ही परी फॉउंटेंन भी भक्तों के लिए आकर्षण बना हुआ है। मन्दिर का आकर्षक प्रवेश व निकास द्वार, पुष्पवाटिका, पार्वती सरोवर का किनारा तो नव दम्पतियों के लिए सेल्फी पॉइंट बना हुआ है। मन्दिर के समीप ही अन्नपूर्णा भंडार की स्थापना कराई गई है। पार्वती सरोवर के तट पर आदिकालीन परशुराम मन्दिर सहित विराट नारायण मन्दिर का निर्माण व सौंदर्यीकरण का कार्य भी अब अंतिम पड़ाव पर है। दादा गुरु व ब्रह्मलीन महंत शिवशंकर गिरि जी की स्मृति में नेत्रदान शिविर व टूर्नामेंट के आयोजन की परम्परा भी जारी है।

मन्दिर प्रबंधन की परिकल्पना

आगामी योजनाओं में भक्तों के लिए अत्याधुनिक अतिथिगृह का निर्माण, गुरुकुल व गोशाला की स्थापना व गरीब कन्या विवाह योजना की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में मन्दिर प्रबंधन अग्रसर है।

निरंतर जारी है आध्यात्मिक विकास की सफल यात्रा

सेवा भावना के साथ धर्म अध्यात्म के क्षेत्र में निरंतर अग्रसर महंत रविशंकर गिरि जी महाराज को वर्ष 2013 में आयोजित मुंडन समारोह में साधु संतों व गुरु शिवानन्द गिरि द्वारा बाबा सोमेश्वर नाथ के सान्निध्य में पगड़ी चादर देकर महंत के रूप में विभूषित किया गया। इंजीनियरिंग के दायित्व से विमुख होकर महंत की गद्दी पर आसीन होते ही बाल स्वामी के रूप में रविशंकर जी महाराज की आध्यात्मिक विकास की यात्रा आरंभ हो गयी। महंत की गद्दी पर आसीन होने के साथ ही इन्होंने अपने गुरु शिवानंद गिरि की अधुरी रचनात्मक कार्यों को पूरा करने में जुट गए। वर्ष 2015 में आई नेपाल की भूकम्प त्रासदी की घटना ने इस बाल संत को झकझोर कर रख दिया और वे राहत सामग्री को ट्रक से लेकर भूकम्प पीड़ितों के सहायतार्थ काठमांडु नेपाल की ओर निकल पड़े। इतना ही नहीं गण्डक नदी के बाढ़ पीड़ितों के बीच राहत सामग्री पहुँचाकर सरकार व प्रशासन के साथ भी इनको हाथ बटाते देखा गया। हमलोगों के लिए यह सुखद संयोग रहा कि वर्ष 2021 में श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा महाकुंभ हरिद्वार द्वारा इनको युवा महामण्डलेश्वनर पद से अलंकृत कर बिहार वासियों को गौरवान्वित करने का अवसर प्रदान किया गया। महामण्डलेश्वर पद से विभूषित होने के साथ ही इनको उसी वर्ष श्री काशी विश्वनाथ कॉरिडोर स्थापना समारोह में भी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 2023 में द्वादश ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर धाम में आयोजित भव्य शिव प्रतिमा अनावरण समारोह में भी तत्कालीन मुख्य मंत्री शिवराज सिंह चौहान, मध्य प्रदेश शासन द्वारा इनको मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का सुअवसर प्राप्त किया गया। इस वर्ष 22 जनवरी 2024 को अयोध्या धाम में आयोजित रामलला प्राणप्रतिष्ठा समारोह में स्वामी जी को शामिल होने का शुभ अवसर प्रदान किया गया। बसन्त पंचमी महोत्सव प्रयाग की पंचकोशी परिक्रमा समारोह में भी शामिल होने का न्योता इनको मिला है जो हमलोगों के लिए भी सौभाग्य की बात है। स्वामी रविश्वांकर स्वयं कहते हैं कि–

"कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए।
साधन सभी जुट जाएंगे संकल्प रूपी धन चाहिए।।"

महामण्डलेश्वर का मानना है कि आने वाला समय अब सफलता व सिद्धि का है। यह भव्य मंदिर साक्षी बनेगा उत्कर्ष का। सोमेश्वरनाथ मन्दिर हमें सिखाता है कि अगर लक्ष्य सत्य प्रमाणित हो तो उसे प्राप्त करना असंभव नहीं है।

जीवन का अमूल्य सौंदर्य है मधुर वचन

मधुर वचन मानव जीवन का सौंदर्य हैं संगीत है एवम् वातावरण को सुगंधित करने का एक माध्यम है। इससे अपना मन तो मीठा होता ही है, साथ ही सुनने वालों का मनमयूर प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठता है। यह प्रकृति का एक मुफ्त टॉनिक है, जो ईश्वर की ओर से उपहार स्वरूप मनुष्य मात्र को मिला है। कहा जाता है कि किसी व्यक्ति के अन्दर कौन-कौन से विचार उत्पन्न हो रहे हैं, उसका सही दर्पण मधुर वचन (मीठी बोली) ही है। जिस व्यक्ति के बोल मधुर होते हैं। वह अन्य पुरुषों के मुकाबले अधिक शक्तिशाली कल्याणकारी व शुद्ध विचार का होता है। समाज में उसकी पुछ होती है। व जन-जन का प्यारा होता है। मधुर वचन अभिव्यक्ति की एक कला है।

मीठी बोली उत्थान व कठोर बोली पतन तथा तीखी व कर्कश बोली-क्रोध, कलह एवं उपहास का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके साथ ही मौन रहना गंभीरता तटस्था एवं गरिमा का परिचायक है।

ठीक इसके विपरीत वाचालता उपहास एवं निन्दनीय चरित्र का घोतक हैं। अतः हमें कभी भी इफ-वट के साथ अपनी वाणी को तुल नहीं देना चाहिए। झूठ तो कभी नहीं बोलना चाहिए कहा गया है कि—

साँच बराबर तप नहीं
कि झूठ बराबर पाप

फिर झूठ बोलने से क्या फायद। मधुर बोले, सच बोले और संभलकर बोले। यही सर्वोत्तम हैं।

काले कौवे की तरह अपावन व दुर्जन स्वभाव का होना मनुष्य का कर्तव्यपालन नहीं है। मधुर वचन से दुश्मन भी अपना बन जाता है, जबकि कटु भाषा से अपने भी पराये हो जाते हैं। तभी तो कहा है—

ऐसी वाणी बोलिए की मन का आपा खोय।
औरों को शीतल करे आपो शीतल होय।।

मधुर वचन ज्ञान का भंडार होता है, जबकि बकवास की बोली व्यार्थ की गठरी होती है। मधुर वचन में नम्रता के साथ मीठे फल का स्वाद होता है, जबकि कटुभाषा में लालमिर्च की तिताई का आभास होता है। मनुष्य की भाषा सृष्टि के सभी जीव समझते है। मधुर वचन सबसे मीठा प्रसाद है। जिसका वितरण कभी-भी कहीं-भी, एवं किसी जगह पर किया जा सकता है। मृदभाषी व्यक्ति दीर्घजीवी होता है, खुशदिल होता है एवं समाज का सम्मानित होता है। अपने मन के भावों को मीठे वचन में उद्‌भाषित करने के अनेक माध्यम हैं—यथा

कला करके, अभिनय करके, कविता करके, नाटक करके, तथा संगीत के साथ मुखमंडण्ल के द्वारा हाव-भाव प्रस्तुत करके भी मधुर वचन को दूसरों के समक्ष परोसा जा सकता है। मधुर वचन बोलने से पुण्य का अर्जन व पाप का क्षरण (नाश) होता है।

शास्त्रों में इस बात का उल्लेख है कि सृष्टि के प्रारंभ में यह सारी दुनिया ही मौन थी। सूर्य मौन, चाँद और सितारे मौन, जीव-जन्तु सबके सब-मौन। यह देख माता सरस्वती की कृपा हुई, और सृष्टि में एकाएक स्वर का संचार होने लगा, जिससे विभिन्न प्रकार के स्वर गूंजने लगे। आज माता की कृपा से सृष्टि का कण-कण बोल रहा है।

वेद मंत्रों के पाठ से स्त्री रत्न वंचित क्यो?

- **होता है स्त्री का सर्वांग पवित्र**
- **देवता भी वही वास करते है जहाँ स्त्री को मिलता है सम्मान**
- **स्त्री के बिना पुरुष कभी पूर्ण नही होसकता**

चालीस के दशक में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में 'कल्याणी' नाम की एक छात्रा वेद की कक्षा में प्रवेश लेना चाहती थी, परंतु तात्कालिक प्रचलित प्रथा के कारण उसके प्रवेश पर रोक लगा दी गई। कार्यकारी समिति ने एकमत से घोषित कर दिया कि स्त्रियोंको वेद का पाठ व अध्ययन करने का कोई भी अधिकार कदापि नहीं दिया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में पत्र पत्रिकाओं में पण्डित मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में अलग अलग सुझाव व विचार आमंत्रित करने के लिए एक समिति गठित की गई। अनेक धर्मिक विद्वानों के शास्त्र सम्मत सुविचार व तर्को से यह निष्कर्ष निकाला गया कि आधी आबादी को भी हर क्षेत्र में समान अधिकार मिलने चाहिए। स्त्रियां धर्म कर्म से वंचित क्यों हो सकती है? ईश्वर की दृष्टि में कोई लिंग भेद नहीं होता है। 22 अगस्त 1946 को सनातन धर्म के प्राण समझे जाने वाले आदरणीय मालवीय जी द्वारा स्त्रियों के पक्ष में लिए गए निर्णय व घोषणा के आधर पर 'कल्याणी' का कल्याण हुआ और उसे वेद का अध्ययन करने को लेकर नामांकन कराने का अधिकार प्राप्त हुआ। वेद विषय का अध्ययन करने का अधिकार हासिल कर आज स्त्रियां बिना रोक टोक के काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वेद का अध्ययन कर रही है। यह तय है कि भारतीय संस्कृति भारत ही नही सम्पूर्ण विश्व की धरोहर है। सर्वधर्म सद्भाव, अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की देन है। इस संस्कृति में नर-नारी को पवित्र माना गया है। नारी के पूज्य भाव को देखते हुए यहां तक कहा गया है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" अर्थात जहाँ स्त्री की पूजा होती है देवता वही वास करते है। स्त्री के बिना पुरुष को धर्म कार्य, तीर्थ यात्रा करने तक का अधिकार नहीं है। स्त्रियों के मासिक धर्म की सम्पन्नता के साथ ही उसके समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं साथ ही उसे पवित्रा माना जाता है। शास्त्रोक्त मान्यता है कि ब्राह्मण का अगर चरण पवित्र होता है तो दूसरी ओर स्त्री सर्वाग पवित्र होती है। स्त्री के लिए साष्टांग प्रणाम भी विहित नहीं है—हाथ जोड़ लेने मात्र से ही उसका साष्टांग प्रणाम हो जाता है। हिंदू धर्म अत्यधिक उदार है जो स्त्रियों को श्रद्धा सहित विशिष्ट सम्मान देता है। ऐसी स्थिति में यह कैसे संभव है कि मंत्र, जप, यज्ञ, व हवन आहुति उपासना आदि धार्मिक कार्यो के लिए स्त्री को अयोग्य कह दिया जाय। शास्त्रों में स्त्री को रत्न कहा गया है। जिस कूल में स्त्री पति से और पति स्त्री

से संतुष्ट रहता है उस कूल में सदा कल्याण ही होता है। आजकल जितनी भी समानता और अधिकार की बात हो रही है उतना ही स्त्रियों पर अत्याचार भी हो रहा है। पुरुष वर्ग को अपने पुरुषत्व का या अर्थोपार्जन का इतना अहं है कि वह स्त्री को अपना मित्र या धर्मपत्नी न समझकर दासी समझने लगता है जबकि एकमात्र स्त्री ही पुरुष को पूर्ण बनाती है। विवाह के बाद पुरुष पूर्ण होता है साथ ही उसे धार्मिक कार्य करने का अधिकार भी प्राप्त होता है । शास्त्रों में स्त्री शक्ति, मंत्र शक्ति का जितना महत्व दिया गया है पुरुष वर्ग को उसके बराबर का दर्जा प्राप्त नही है। माता की प्रथम पूजनीयता का उद्घोष करते हुए मनु महराज जी स्वयं कहते हैं—"शास्त्रम तू पितृन्माता माता गौरववेण अतिरिच्यते"। अर्थात पिता से हजार गुना, मां का गौरव स्थान है। यही कारण है कि हमारे समाज मे सबसे पहले मातृ शक्ति का ही स्मरण विहित है जैसे राधेश्याम, सीताराम लक्ष्मीनारायण, गौरी शंकर आदि। मनुस्मृति कहता कि संतान तो आत्मा के सदृश होता है ऐसे में पुत्र व पुत्री दोनों एक समान है। ऐसे में यदि स्त्री को घृणित, पतित, अस्पृश्या व अनाधिकारिणी मान लिया जाय तो इसे निरिमूर्खता तथा स्वार्थपरक अज्ञानता ही कहा जायेगा।

ऐसे में अनेक प्रमाण उपलब्ध है जिससे यह पुष्टि होती है कि पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी पूजा, जप, तप, यज्ञ वेद पाठ आदि का समान रूप से अधिकार प्राप्त है। वेदों में तो ऐसी अनेकों ऋचाएं हैं जो पूर्णतया स्पष्ट करती है कि यह मंत्र स्त्रियों के द्वारा ही जपने योग्य होते हैं। स्त्री के संदर्भ में ऋग्वेद कहता है कि सूर्योदय के साथ मेरा सौभाग्य बढ़े, मैं पतिदेव को प्राप्त करूं। पतिदेव मेरी इच्छा ज्ञान व कर्म के अनुकूल कार्य करें। "त्र्यंबकम यजामहे सुगंधिम पति वेदनम। उर्वारुकमिव बंधनादितो मुक्षीय मामुत:।।"— (यजुर्वेद 03/60 व रुद्राष्टाध्यायी पृ–06)

अर्थात—हम कुमारियाँ उत्तम पतियों को प्राप्त करने वाले परमात्मा का स्मरण करती हुई यज्ञ करती हूं जो हमें इस पितृकुल से छुड़ा दे किंतु पति कुल से कभी वियोग न कराए। अत: स्प्ष्ट है कि हमारी सनातन संस्कृति द्वारा भी समाज में स्त्रियों को गौरवपूर्ण आदर व अधिकार प्रदान किये गए है। शास्त्र, शासन व सरकार की ओर से भी स्त्रियों के कल्याणार्थ निरंतर रचनात्मक अभियान चलाये जा रहे है ताकि हमारे समाज मे स्त्रियां गौरवपूर्ण सम्मान से विभूषित हो सके।

‘शुभ जन्म दिनम तुभ्यं’ बोले ‘हैप्पी वर्ड डे टू यू’ को भूलें

- **जन्म दिन के अवसर पर घर में हो दीप-यज्ञ का आयोजन।**
- **फूक मारकर मोमबत्ती बुझाने की संस्कृति को तोड़े।**

मनुष्य का अपना जन्म दिन उसके लिए सबसे बड़े हर्ष, गौरव और सौभाग्य का दिन होता है। हमारे लिए शिव के जन्म तिथि को चतुर्दशी, राम के जन्म तिथि को रामनवमी और कृष्ण के जन्म तिथि को जन्माष्टमी जितना महत्वपूर्ण है उतना ही किसी भी सामान्य व्यक्ति के जीवन में भी उसका जन्म दिन भी उल्लास एवम उत्सव का दिन होता है। हम सभी अपने जन्म दिवस के अवसर पर थोड़ा गम्भीर रूप से आत्म निरीक्षण कर ले तो आने वाले दिन सूर्योदय की तरह प्रकाशवान हो सकता है। पश्चात्य सभ्यता की अंधानुकरण की दौड़ में आजकल मध्यम एवम उच्च वर्ग के अधिकांश लोग अपना व अपने बच्चों का जन्म दिन गत वर्ष की संख्या में मोमबत्तियां जलाकर, फिर उसपर फूंकमार उसे बुझाकर ‘हैप्पी बर्थडे टू यू’ बोलते हुए तालिया पीटते हुए मनाते है। हमारे सनातन संस्कृति में फूकमारकर किसी प्रज्जवलित ज्योति को बुझा देना घोर अपशकुन है साथ ही हमारी भारतीय संस्कृति एवम परम्परा के विरुद्ध है। हम अपने जन्मदिवस संस्कार को अपनी संस्कृति से जोड़ते हुए दीर्घ जीवन जीना चाहते है तो फूक मार ज्योति को बुझाने जैसी अंग्रेजियत परम्परा को त्यागना होगा। आइए हम संकल्पित हो कि अपने जन्म दिवस को भूले नही जबकि उसे एक पारिवारिक उत्सव के रूप में मनाए। जन्मदिवस समारोह के आयोजन को लेकर यदि परिस्थितियां अनुकूल नही हो तो अपने घर परिवार में मात्र दीप यज्ञ का ही आयोजन कर इस संस्कार को मनाने की तैयारी अवश्य करें। जन्म दिवस को प्रात: काल मे उठकर सर्वप्रथम अपने माता पिता, दादा दादी, गुरु व श्रेष्ठ जन को प्रणाम करके उनसे शुभाशीष ग्रहण करे। इतना ही नही सर्वप्रथम सूर्य भगवान का दर्शन कर गायत्री मन्त्र का मन ही मन जप करे। तदुपरांत शौचादि क्रिया से निवृत होकर सर्वोषधि, गंगाजल सहित शुद्धजल से स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धरण कर पूर्वाभिमु होकर शुद्धासन पर बैठकर गणपति, शिव, विष्णु आदि देवो तथा नवग्रह पूजन से पूर्व स्वस्तिवाचन शांतिपाठ आदि मंत्रों का शुद्ध चित होकर पाठ व पूजन करवाना चाहिए। विशेषकर वर्ष कुंडली और अरिष्टकर ग्रहों एवम मुंथा आदि की दान, जप आदि करवाना चाहिए। ताकि सुख समृद्धि आदि बनी रहे। इस दिन विशेषकर मार्कण्डेय, भारद्वाज, कश्यप, अत्रेय, विश्वामित्र, गौतम, श्री परशुराम, श्रीनारद, वशिष्टादि, दीर्घजीवी, ऋषियों का स्मरण कर नमस्कार कर दीर्घायुष्य की कामना करें। पूजनोपरान्त हवनादि कार्य करना शुभ होता है। जन्म दिन पर तिल का प्रयोग भी आयुवर्द्धक होता है। तिल स्नान, तिल होम, तिल निर्मित वस्तु (क्षीराद) का प्रयोग व दानादि शुभप्रद होता है।

पूजा के बाद केशरी वर्ण के वस्त्र में गूगल, नीम की पत्तियां, गोरोचन, सफेद सरसो तथा दूर्वा बांधकर, दायी भुजा में किसी ब्राह्मण द्वारा स्वस्तिवाचन व मंगल पाठ मंत्रों के सस्वर उच्चारण के साथ कलाई पर बंधवा लेने से वर्षपर्यत किसी भी प्रकार का अनिष्ट का भय नही रहता है। इसके बाद दीप यज्ञ की तैयारी करें। यह शरीर पंचतत्वों से बना है ऐसे में हरा, काला, लाल, पीला व सपफेद रंग के अक्षत का एक थाली में पुंज बनाये। पूरे किए गए जीवन के वर्ष की संख्या के अनुरूप एक थाली में मिट्टी या आटे का दीपक सजाए साथ ही जीवन के नए वर्ष के लिए एक बड़ा सा दीपक बनाये। थाली में सजाएं गए दीपकों को स्वस्तिवाचन, मंगलपाठ, गायत्री मंत्र व महामृत्युंजय मंत्र के उच्चारण के साथ क्रमवार प्रज्ज्वलित कर स्वकल्याण की कामना करें। परिवार के सभी सदस्य ‘हैप्पी बर्थ डे टू यू’ कदापि नही बोले जबकि इसका ही संस्कृत अनुवाद– **“शुभ जन्म दिनम तुभ्यं शुभ जन्म दिनम तव हे। सकलं मधुरम भुयात। सकलं सफलं भुयात।।”** का सस्वर उच्चारण कर ‘चिरंजीवी भव’ का आशीष प्रदान करें।

शिव की बारात

मंगल दिन कैलाश का, बड़ी खुशी की बात। भूत प्रेत से सज गई, शिवजी की बारात।।
शिवजी की बरात, बाराती बड़े भयंकर। गले सर्प का हार, जटा मुख शोभे सुंदर।।
बाघम्बर की चीर, भस्म मलते मुख मंडल। हुआ नगर भयभीत, कहें सब कैसे मंगल।।

मस्तक शोभे चन्द्रमा, जटा जान्हवी धार। नीलकंठ अद्‌भुत बड़े, नहीं कहीं घर बार।।
नहीं कहीं घर बार, पहाड़ों पर रमते हैं। संगी परम पिशाच, देखकर सब डरते हैं।।
मचती हाहाकार, बराती देते दस्तक। कुछ की कंवल देह, नहीं है उस पर मस्तक।।

सुंदर गौरा का नगर, तोरण सुंदर द्वार। उत्तम नारी नर सजे, शोभा अपरंपार।।
शोभा अपरंपार, मगर यह आफत उनपर। देखी जो बारात, निवासी भागे डरकर।।
थर-थर कांपे देह, घरों में छिपते घुसकर। मैना को अनुमान, नहीं यह दूल्हा सुंदर।।

सेना है यमराज की, झूठ कहे बारात। बेटी यह सुकुमार जो समझ रही ना बात।।
समझत रही ना बात, रहेगी बोली कैसे। संग रहे वह सांप, डसेगा सबको कैसे।।
जिद छोड़ो तुम आज, नहीं यह दुख है लेना। दूल्हा यह बैताल, लिए भूतों की सेना।।

शिवजी भोले हैं बड़े, मंगल मूरत आप। देवों के वह देव हैं, सुर नर करते जाप।।
सुर नर करते जाप, बड़े दानी कैलाशी। मृत्युंजय हैं देव, एक हीं वह अविनाशी।।
नहीं जगत का मोह, कि डमरू बम-बम बोले। उनसे हीं अनुराग, हमारे शिवजी भोले।।

गिरिजा उनकी स्वामिनी, यही प्रेम की जीत। कभी सती बन के जली, आज मिलन की रीत।।
आज मिलन की रीत, नहीं चिंतित हो माते। दे योगी को दान, हमारे स्वामी आते।।
रहना उसके संग, रहेगी सुख से तनुजा। आई है शिवरात, मिलेगी शिव से गिरजा।

महिमा सोमेश्वरनाथ की

श्री सोमेश्वर सोम भाल पर। उमा संग शिव मृगछाल पर।।
लटा-जटा में गंग बहाये। सर्पमाल तन भस्म लगाये।।

कर में डमरु त्रिशूलधारी। भव्य त्रिपुंड नयन सुखकारी।।
कानन-कुंडल की छवि न्यारी। मगन होत सब रूप निहारी।।

आगे नन्दी राजीव लोचन। गोद गणेश लिए भवमोचन।।
श्री सोमेश्वर जय सुखकंदा। वरद्हस्त शिव अति आनंदा।।

जो निज उर छवि धरे-सुजाना। तापर कृपा करहिं भगवाना।।
पुत्र प्राप्ति सुख-सम्पति नाना। देत मुदित मन कृपानिधाना।।

जय सोमेश्वर जय परमेश्वर। नमो-नमो जय हे अखिलेश्वर।।
तुमहीं दाता, तुमहीं भिखारी। धन्य हो तुम भोला भंडारी।।

तेरी महिमा जग में न्यारी। मह-मह करे, ज्यों केशर क्यारी।।
तुम बिनु कौन करे-जग पारा। नाम तुम्हारो विदित संसारा।।

त्रिविध ताप हर्ता त्रिपुरारी। शिव समान नहीं पर उपकारी।।
सकल-सुमंगल के हर दाता। त्रैलोकी भये जग विख्याता।।

सुख-शान्ति, ऐश्वर्य के दाता। छप्पर फाड़ के देत विधाता।।
कनक सिंहासन पल में देते। दुःख दारिद्र क्षणहिं हर लेते।।

लेन-देन व्यापार दोगुना। बढ़ जाये साहस चौगुना।।
जो नर मन से शिव को ध्यावे। सकल मनोरथ का फल पावे।।

श्री सोमेश्वर दीनदयाला। सचर-अचर सबके प्रतिपाला।।
जहाँ-जहाँ शिव करहिं निवासा माँ अन्नपूर्णा के तहँ वासा।।

मातु-पिता, बन्धु-सुत दारा। छुटहिं सकल कुटुम्ब परिवारा।।
शिव महिमा कलिकाल जो गावे। नरयोनि पुनि पुनि वह पावे।।

ओम् नम:शिवाय जपहिं जो प्राणी। सुर-असुर, ऋषि-मुनि, नर ज्ञानी।।
अंधा-गूंगा, बधिर अरू काना। सबकर शिव करहिं कल्याना।।

अरण्यराज अति नाम पुराना। वेद-शास्त्र सब करहीं बखाना।।
श्री सोमेश्वर करहिं निवासा। मिटहीं क्लेश जाहिं जो पाशा।।

बिहार का काशी अरेराज है। धर्मस्थल यह तीर्थराज है।।
जहाँ जीव शिव से मिलता है। तभी कली से फूल खिलता है।।

जो नर मन से शिव को ध्यावे। सकल मनोरथ का फल पावे।।
वही नरोत्तम भक्त बड़ज्ञानी। जिसने शिव की महिमा जानी।।

अरेराज की महिमा न्यारी। शिव विराजैं संग शैल कुमारी।।
बाजे मृदंग, नाचे बहु भांति। शिव सम्मुख होहीं किन्नर जाति।।

आँचल खूँट पर नाच नचावे। सो सुहागिनी परम पद पावे।।
गठबन्धन नर करे जो कोई। तापर कृपा शिव की होई।।

हे मृत्युंजय, हे देवपाल। कालों के हो तुम महाकाल।।
अल्प मृत्युभय नहीं सतावे। जो नित शिव को मन से ध्यावे।।

क्षण में रंक नृप पद पावे। स्वर्णमुकुट सिर छत्र धरावे।।
जयति जय हो, जय–जय नटराज। जहाँ सोमेश्वर, वहीं अरेराज।।

अरेराज सुरपुर जस नीका। नर–नारी सवै परम–पुनीता।।
तुमको भजहिं मिलि सब संता। ब्रह्मा–विष्णु धरि रूप अनंता।।

जय सोमेश्वर जय कैलाशी। बंदौ चरण–कमल सुखराशी।।
जयगोविन्द मूढ़मति अज्ञानी। महिमा अमित न जाय बखानी।।

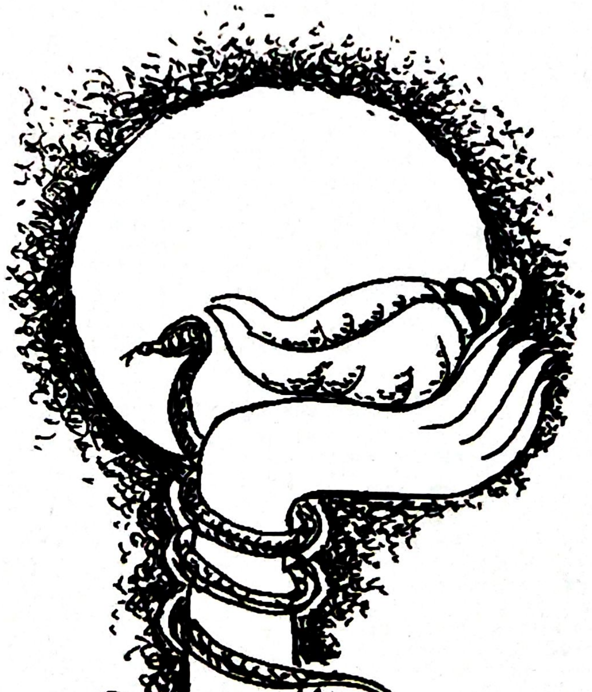

शिव मंगलकारी

नीलकंठ अविनाशी शिव मंगलकारी
देव मनुज असुरों के सब के त्रिपुरारी।

गले वासुकी माला नंदी पर चढ़ते
अर्ध अंग में अम्बे पर्वत जो रमते
जटा जूट में गंगे चंद्र मुकुट धारी
नीलकंठ अविनाशी शिव मंगलकारी।

अरेराज सोमेश्वर विश्वनाथ काशी
अमरनाथ बर्फानी स्वयंभू कैलासी
हस्त पिनाक चमकता शिव त्रिपुंडधारी
नीलकंठ अविनाशी शिव मंगलकारी।

महल नहीं है जिनका धूप छांह रमते
अद्‌भुत श्रृंगारी शिव भस्म मला करते
भांग धतूरा विष का भोग लगे भारी
नीलकंठ अविनाशी शिव मंगलकारी।

शिव अघोर अति दुर्गम बाघंबर तन पर
महाकाल विद्याधर दिव्य त्रिलोचन वर
प्रलय काल में पावक शिव तांडवकारी
नीलकंठ अविनाशी शिव मंगलकारी।

नृत्य नाटिका तुमसे भावुक नटराजन
हैं कठोर ऊपर से मोम सरीखा मन
कामदेव संहारक रति के दुख हारी
नील कंठ अविनाशी शिव मंगलकारी।

मुरुगन और गजानन शंकर सुत तेरे
हे महेश करुणामय कष्ट हरो मेरे
सोमवार जब श्रावण मधुकर जलधारी
नीलकंठ अविनाशी शिव मंगलकारी।

'शाकम्भरी वाटिका' के पुष्प परिवार का जलाभिषेक करते सोमेश्वरपीठाधीश्वर रविशंकर जी महाराज

पार्वती सरोवर के तट पर अर्घ्य दान को लेकर उमड़ी छठ व्रतियों की भीड़

सोमेश्वरनाथ मंदिर के आँगन में बाबा का दर्शन को लेकर उमड़ा आस्था का जन शैलाब

प्राण प्रतिष्ठा समारोह श्री राम मन्दिर अयोध्या
के सान्निध्य में स्वामी रविशंकर जी महाराज

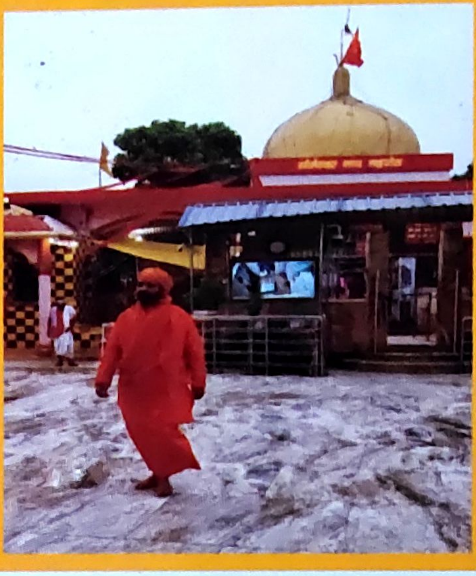

हनुमानगढ़ी दरबार अयोध्या में हाजिरी देते
महामंडलेश्वर

स्वामी रविशंकर गिरि

महामंडलेश्वर श्री पंच दस नाम जूना अखाड़ा
पीठाधीश्वर श्री सोमेश्वर नाथ धाम अरेराज

Swami Ravi Shankar Giri